वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 18 | बुधवार 17 जून 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

विश्वास का एक अनूठा 'संगम' : राठौड़

कर्नल राठौड़ ने इस एमओयू को तकनीक, इंफ्रास्ट्रक्चर और एमएसएमई सेक्टर के विश्वास का एक अनूठा 'संगम' बताया। वहीं, उद्योग एवं वाणिज्य राज्यमंत्री के .के . विश्नोई ने कहा कि राज्य सरकार निवेश को सुगम बनाने के लिए निरंतर नई नीतियां ला रही है। उन्होंने राजस्थान में सेमीकंडक्टर चिप्स उत्पादन की नई नीति का उल्लेख करते हुए बताया कि राज्य में उद्योग अनुकूल वातावरण तैयार करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। स्टोनमार्ट के अगले यानी 14वें संस्करण का आयोजन 17 से 20 फरवरी, 2028 के मध्य किया जाएगा। इसकी तैयारी के लिए विश्व के 11 देशों में रोड शो आयोजित किए जाएंगे ताकि अधिक से अधिक अंतरराष्ट्रीय निवेश और व्यापारिक सहभागिता सुनिश्चित हो सके।

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान को वैश्विक औद्योगिक मानचित्र पर अग्रणी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए आगामी 'इंडिया स्टोनमार्ट 2028' के आयोजन के लिए त्रि-पक्षीय समझौते (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। जयपुर के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं विनियोजन निगम (रीको), सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ स्टोन्स (सिडोस) और लघु उद्योग भारती के प्रतिनिधियों ने एक साथ आकर इस मेगा इवेंट की नींव रखी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में सरकार राजस्थान को एक औद्योगिक हब बनाने के लिए संकल्पित है। उन्होंने कहा कि इंडिया स्टोनमार्ट का पिछला संस्करण अत्यंत सफल रहा था, लेकिन वर्ष 2028 का आयोजन भव्यता और वैश्विक सहभागिता के मामले में नए कीर्तिमान स्थापित करेगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि चीन, लंदन और इटली जैसे देशों में होने वाली अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों का अध्ययन कर राजस्थान के आयोजन को और अधिक अत्याधुनिक और नवाचारी बनाया जाए। उन्होंने जोर दिया कि इसमें स्टार्टअप्स, आधुनिक मशीनों के प्रदर्शन और वैश्विक आर्किटेक्ट्स की भागीदारी पर विशेष फोकस होना चाहिए।

शिक्षा के क्षेत्र में भारत का स्वर्णिम अतीत : 'गुरुकुल पद्धति' और प्राचीन ज्ञान परंपरा को अपनाकर ही आगे बढ़ेगा देश

बच्चों में नैतिकता और संस्कार निर्माण हो सर्वोच्च प्राथमिकता:राज्यपाल बागड़े

राज्यपाल ने किया प्राचीन भारतीय ज्ञान के पुनरुत्थान का आह्वान

बौद्धिक क्षमता और प्राचीन गौरव का पुनरुत्थान

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने मंगलवार को सुरेश ज्ञान विहार विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'एजुकेशन समिट' को संबोधित करते हुए शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन और नैतिक मूल्यों के समावेश पर जोर दिया। राज्यपाल ने अपने उद्बोधन में स्पष्ट किया कि शिक्षा मात्र डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण और मनुष्य के सर्वांगीण विकास का सशक्त उपकरण है। उन्होंने शिक्षण संस्थानों का आह्वान किया कि वे बच्चों में नैतिकता, सहनशीलता, अनुशासन और भारतीय संस्कारों का बीजारोपण करने का कार्य प्राथमिकता के साथ करें। राज्यपाल बागड़े ने कहा कि आज पूरी दुनिया में भारतीय प्रतिभा (टेलेंट) की मांग है। इस सामर्थ्य को और अधिक निखारने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हमें अपनी नई पीढ़ी को प्राचीन भारतीय ज्ञान के आलोक में तैयार करना होगा। उन्होंने अफसोस जताते हुए कहा कि भारत में हुए अनेक ऐतिहासिक आविष्कारों का श्रेय पश्चिम के वैज्ञानिकों को दिया गया, क्योंकि हमने अपनी उपलब्धियों को सहेजने और उनका प्रसार करने में कमी बरती। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि विमान का पहला सफल परीक्षण मुंबई के संस्कृत विद्वान शिवकर बापूजी तलपड़े ने किया था, जबकि श्रेय राइट बंधुओं को मिला। इसी प्रकार, गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत के वास्तविक प्रतिपादक भास्कराचार्य थे, लेकिन वैश्विक स्तर पर न्यूटन को ख्याति मिली। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत को अपनी इस महान विरासत और गौरवशाली इतिहास को नई पीढ़ी तक पहुँचाना ही होगा। इस शिक्षा समिट में बड़ी संख्या में शिक्षाविद, उद्योगपति और छात्र उपस्थित थे।

राजस्थान पत्रिका एवं रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ के सहयोग से आयोजित हुआ 'जयपुर 6 एएम' कार्यक्रम

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान पत्रिका के लोकप्रिय सामुदायिक अभियान ''जयपुर 6 एएम'' के तहत रविवार सुबह जवाहर सर्किल स्थित पत्रिका गेट पर भव्य एवं उत्साहपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ ने सक्रिय सहभागिता निभाई, जिसमें बड़ी संख्या में रोटेरियन्स, उनके परिवारजन एवं शहरवासियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रातःकालीन इस विशेष कार्यक्रम में योग, फिटनेस गतिविधियां, संगीत, हेरिटेज वॉक तथा सामाजिक मेल-मिलाप जैसी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य नागरिकों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, सकारात्मक सोच विकसित करने तथा अपने शहर की संस्कृति और विरासत से जोड़ना था। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने जयपुर की प्राकृतिक सुंदरता, स्वच्छ वातावरण और सुबह की सकारात्मक ऊर्जा का आनंद लिया। विभिन्न आयु वर्ग के प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह के साथ गतिविधियों में भाग लेकर आयोजन को सफल बनाया। इस अवसर पर रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ के अध्यक्ष रोटेरियन अनिल जैन ने कहा कि ऐसे जनसहभागिता आधारित कार्यक्रम समाज में सकारात्मकता का संदेश देने के साथ-साथ रोटरी की जन-छवि को भी सुदृढ़ बनाते हैं। उन्होंने कहा कि राजस्थान पत्रिका जैसे प्रतिष्ठित मीडिया संस्थान के साथ जुड़कर रोटरी के सेवा कार्यों को समाज के व्यापक वर्ग तक पहुंचाने का अवसर मिलता है। उन्होंने सभी नागरिकों से भविष्य में भी ऐसे आयोजनों में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान करते हुए कहा कि रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ समाजहित एवं जनकल्याण के कार्यों के लिए सदैव प्रतिबद्ध है। कार्यक्रम में शामिल प्रतिभागियों ने इसे एक यादगार और प्रेरणादायक अनुभव बताते हुए भविष्य में भी ऐसे आयोजनों के निरंतर आयोजन की अपेक्षा व्यक्त की। ''एक नई सुबह, नए मित्र, नई ऊर्जा और नया उत्साह''

– रोटेरियन अनिल जैन
अध्यक्ष, रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ

नव निर्वाचित प्रबंधकारिणी समिति का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न, विद्यालय के विकास के लिए लिए गए अहम निर्णय

संरक्षण, संवर्द्धन और कायाकल्प योजना को गति देने का लिया संकल्प

ललितपुर. शाबाश इंडिया

जनपद के एकमात्र संस्कृत शिक्षण संस्थान श्री महावीर दिगम्बर जैन संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं गणेश वर्णी दिगम्बर जैन छात्रावास, साढूमल की नव निर्वाचित प्रबंधकारिणी समिति का शपथ ग्रहण समारोह विद्यालय परिसर में गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ पंडित संतोष शास्त्री द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। समारोह में पूर्व बैठक की कार्यवाही की समीक्षा के उपरांत निर्वाचन अधिकारी एडवोकेट अभय जैन एवं डॉ. कमलेश जैन ने नव निर्वाचित पदाधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर वर्द्धमान कुमार जैन ने अध्यक्ष, राजेन्द्र कुमार जैन ने उपाध्यक्ष, रतन चन्द्र जैन ने अधिष्ठाता, सिंघई अरविन्द कुमार जैन ने उप अधिष्ठाता, सिंघई धन्य कुमार जैन (एडवोकेट) ने प्रबंधक, सिंघई कमल जैन ने संरक्षक, जीवन कुमार जैन ने मंत्री, अनिल कुमार जैन ने उपमंत्री, दीपक कुमार जैन ने कोषाध्यक्ष तथा डॉ. शिखर चन्द्र जैन ने लेखा निरीक्षक पद की शपथ ग्रहण की। कार्यकारिणी सदस्यों के रूप में राजेश कुमार जैन, कल्याण कुमार जैन, सिंघई प्रकाश चन्द्र जैन, सुरेन्द्र कुमार जैन, चक्रेश कुमार जैन, देवांश जैन एवं अजय कुमार जैन ने भी शपथ ली। विद्यालय के प्रधानाचार्य अभिषेक जैन शास्त्री को पदेन सदस्य के रूप में शपथ दिलाई गई। शपथ ग्रहण के पश्चात सभी नव निर्वाचित पदाधिकारियों एवं सदस्यों का सम्मान किया गया। पदाधिकारियों ने विद्यालय एवं छात्रावास के संरक्षण, विकास और उन्नयन के लिए पूर्ण समर्पण के साथ कार्य करने तथा शीघ्र ही कायाकल्प योजना को मूर्त रूप देने का संकल्प व्यक्त किया।

ट्रस्ट कमेटी की बैठक में विकास संबंधी महत्वपूर्ण निर्णय

इस अवसर पर मीटिंग हॉल में ट्रस्टी सुधीर कुमार जैन (झांसी) की अध्यक्षता में ट्रस्ट कमेटी की बैठक आयोजित की गई, जिसमें संस्था के समग्र विकास से जुड़े अनेक

महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। ट्रस्टी सुधीर कुमार जैन ने कहा कि 109 वर्षों की गौरवशाली यात्रा के दौरान यह संस्था शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देती रही है। ट्रस्टी देवेन्द्र कुमार जैन 'झंडा वाले' ने विद्यालय की स्थापना के प्रेरणास्रोत पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी एवं संस्थापक श्री लक्ष्मीचंद जी रईस बमराना के योगदान को सदैव प्रेरणादायी बताया। ट्रस्टी सिंघई कन्छेदी लाल जैन (मड़ावरा) ने कहा कि इस संस्थान से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी देश के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं। वहीं ट्रस्टी डॉ. सुनील जैन 'संचय' ने कहा कि 109 वर्षों से संचालित यह संस्था संस्कृत, प्राकृत भाषा, जैन दर्शन तथा भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण एवं संवर्द्धन में उल्लेखनीय भूमिका निभा रही है।

पुस्तकालय को मिली 200 पुस्तकों की सौगात

विद्यालय के पुस्तकालय में लगभग 10 हजार महत्वपूर्ण पुस्तकों के साथ अनेक प्राचीन पांडुलिपियां भी सुरक्षित हैं। पुस्तकालय के समृद्धिकरण के उद्देश्य से डॉ. सुनील जैन 'संचय' ने संस्कृत, प्राकृत, जैन दर्शन एवं आध्यात्मिक विषयों से संबंधित 200 पुस्तकों का योगदान दिया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप आयोजित करेगा "भावना योग" कार्यक्रम

परम पूज्य मुनि श्री 108 प्रमाण सागर जी महाराज की प्रेरणा से होगा आयोजन, शहरवासियों से सहभागिता की अपील

गंगापुर सिटी. शाबाश इंडिया

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, गंगापुर सिटी की ओर से 18 जून को विशेष योग कार्यक्रम भावना योग का आयोजन किया जाएगा। यह कार्यक्रम परम पूज्य मुनि श्री 108 प्रमाण सागर जी महाराज की पावन प्रेरणा एवं आशीर्वाद से आयोजित होगा। ग्रुप के तत्वावधान में आयोजित यह कार्यक्रम गुरुवार, 18 जून 2026 को प्रातः 8:00 बजे से 9:30 बजे तक भावना योग केन्द्र, वर्धमान हॉस्पिटल, गंगापुर सिटी में होगा। कार्यक्रम के संयोजक वर्धमान हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. मनोज जैन एवं डॉ. सुलेखा जैन हैं। दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप के अध्यक्ष नरेन्द्र जैन नृपत्या ने बताया कि आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में तनाव, चिंता और विभिन्न बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। ऐसे में योग एक ऐसा प्रभावी माध्यम है, जो व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों को यह संदेश देना है कि योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि स्वस्थ तन, शांत मन और संतुलित जीवन का आधार है। उन्होंने बताया कि भावना योग के माध्यम से शारीरिक आसनों के साथ-साथ मानसिक शांति, आत्मिक संतुलन और आध्यात्मिक चेतना पर भी विशेष बल दिया जाएगा। जैन दर्शन में भावनाओं की शुद्धि को सर्वोच्च महत्व दिया गया है और यही इस आयोजन की मूल भावना भी है। ग्रुप के सचिव महेश जैन ने बताया कि यह कार्यक्रम किसी धर्म या समुदाय विशेष तक सीमित नहीं है। इसमें सभी साधर्मी बंधुओं के साथ-साथ गंगापुर सिटी के सभी नागरिक सादर आमंत्रित हैं। उनका कहना है कि योग जाति, धर्म और आयु की सीमाओं से परे है तथा प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान रूप से लाभकारी है। कोषाध्यक्ष सुभाष जैन सौगानी ने बताया कि कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागियों के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं की गई हैं। सुबह के समय आयोजन का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को इसमें शामिल होने का अवसर प्रदान करना है, ताकि वे अपने दिन की शुरूआत सकारात्मक ऊर्जा और स्वस्थ जीवनशैली के संकल्प के साथ कर सकें। दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप की कार्यकारिणी एवं समस्त सदस्यगण ने नगरवासियों, सामाजिक संस्थाओं, युवा संगठनों एवं महिला समूहों से अधिक से अधिक संख्या में कार्यक्रम में भाग लेने की अपील करते हुए कहा कि ''आइए, योग को अपनाएं और स्वस्थ, संतुलित एवं सकारात्मक जीवन की ओर कदम बढ़ाएं।''

राजनीति

शिक्षा से सशक्त हो रहा भारत

विनोद कुमार सिंह 'तकियावाला'

किसी भी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति केवल आर्थिक विकास से नहीं, बल्कि इस बात से तय होती है कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक अवसर कितनी समानता के साथ पहुंचते हैं। जब आर्थिक और सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के प्रतिभाशाली युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलती है, तभी सामाजिक न्याय का उद्देश्य सार्थक होता है। विकसित भारत के निर्माण की दिशा में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की 'अनुसूचित जाति छात्रों के लिए शीर्ष श्रेणी शिक्षा योजना' इसी सोच को साकार कर रही है। भारत में उच्च शिक्षा तक पहुंच लंबे समय तक आर्थिक सीमाओं से प्रभावित रही है। अनेक मेधावी विद्यार्थी संसाधनों के अभाव में अपने सपनों को पूरा नहीं कर पाते थे। वर्ष 2007-08 में शुरू की गई यह योजना ऐसे ही छात्रों को राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित संस्थानों में पढ़ाई के लिए व्यापक आर्थिक सहायता उपलब्ध कराती है। आठ लाख रुपये तक वार्षिक आय वाले परिवारों के विद्यार्थियों को ट्यूशन फीस के साथ छात्रावास, भोजन, पुस्तकें, कंप्यूटर और अन्य शैक्षणिक आवश्यकताओं के लिए भी सहायता दी जाती है, जिससे आर्थिक कठिनाइयां उनकी प्रतिभा के मार्ग में बाधा नहीं बनतीं। योजना का प्रभाव इसके आंकड़ों से स्पष्ट है। वर्ष 2007-08 में जहां केवल 195 विद्यार्थियों को इसका लाभ मिला था, वहीं 2025-26 में यह संख्या बढ़कर 4,742 हो गई है। इसी अवधि में वार्षिक व्यय 2.17 करोड़ रुपये से बढ़कर 117.19 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। यह विस्तार केवल वित्तीय वृद्धि नहीं, बल्कि शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की व्यापक होती प्रक्रिया का संकेत है। आज इस योजना के लाभार्थी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईटी), राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (एनआईटी), भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईआईटी), भारतीय प्रबंधन संस्थानों (आईआईएम), राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों (एनएलयू) और राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान (एनआईडी) जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में अध्ययन कर रहे हैं। यह साबित करता है कि अवसर मिलने पर प्रतिभा किसी भी सामाजिक या आर्थिक बाधा को पार कर सकती है।

संपादकीय

संक्रमण का दौर और भविष्य की चुनौतियां

बगदाद और वाशिंगटन के बीच हालिया सुरक्षा समझौते ने मध्य पूर्व की भू-राजनीति में एक नया अध्याय जोड़ा है। सितंबर 2024 में घोषित इस द्विपक्षीय समझौते के तहत अमेरिका के नेतृत्व वाले अंतर्राष्ट्रीय गठबंधन का इराक में सैन्य मिशन सितंबर 2025 तक समाप्त हो जाएगा, जबकि कुछ अभियान 2026 तक सीरिया में जारी रह सकते हैं। लगभग 2,500 अमेरिकी सैनिकों की मौजूदगी को चरणबद्ध तरीके से कम किया जाएगा, हालांकि उनकी पूरी वापसी तत्काल नहीं होगी। इस समझौते का उद्देश्य इराक की संप्रभुता को सुदृढ़ करना और आईएसआईएस के बचे हुए नेटवर्क के विरुद्ध सहयोग जारी रखना है। यह व्यवस्था 2008 के स्ट्रेटेजिक फ्रेमवर्क एग्रीमेंट (एसएफए) और स्टेटस ऑफ फोर्सेज एग्रीमेंट (एसओएफए) की विरासत पर आधारित है, जिसके तहत 2011 तक अमेरिकी सैनिकों की वापसी सुनिश्चित की गई थी। लेकिन आईएसआईएस के उदय के बाद 2014 में अंतर्राष्ट्रीय गठबंधन को दोबारा इराक लौटना पड़ा। अब प्रधानमंत्री मोहम्मद शिया अल-सुदानी के नेतृत्व में इराकी सरकार का मानना है कि देश की सुरक्षा संस्थाएं पहले की तुलना में कहीं अधिक सक्षम हो चुकी हैं। साथ ही, सरकार ईरान के प्रभाव और घरेलू राजनीतिक दबावों के बीच संतुलन बनाते हुए इस संक्रमण को आगे बढ़ा रही है। योजना के अनुसार पहले चरण में 2025 तक सैकड़ों सैनिक वापस जाएंगे और 2026 के अंत तक शेष प्रक्रिया पूरी होगी, जबकि कुछ सैन्य सलाहकार दूतावास स्तर पर बने रह सकते हैं। इराक के लिए यह समझौता केवल सैन्य पुनर्गठन नहीं, बल्कि संप्रभुता और आत्मनिर्भरता का प्रतीक भी है। वर्षों की अस्थिरता के बाद इराकी सुरक्षा बल अब आईएसआईएस के खिलाफ स्वतंत्र रूप से अभियान चलाने में सक्षम बताए जा रहे हैं। आर्थिक क्षेत्र में भी दोनों देशों के संबंध मजबूत हो रहे हैं। अमेरिकी कंपनियों के साथ ऊर्जा क्षेत्र में हुए निवेश समझौते इराक के पुनर्निर्माण, बुनियादी ढांचे के विकास और विदेशी निवेश को गति दे सकते हैं। अमेरिका के लिए भी यह ''अनंत युद्ध'' की नीति से बाहर निकलकर अपने संसाधनों को चीन और रूस जैसी उभरती रणनीतिक चुनौतियों पर केंद्रित करने का अवसर प्रदान करता है। हालांकि इस समझौते के सामने कई गंभीर चुनौतियां भी हैं। आईएसआईएस पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है और उसके स्लीपर सेल अब भी सक्रिय माने जाते हैं। अमेरिकी सैन्य उपस्थिति घटने से इराकी सुरक्षा बलों पर अतिरिक्त दबाव पड़ सकता है, विशेषकर तब जब ईरान समर्थित पॉपुलर मोबिलाइजेशन फोर्सेज जैसी मिलिशियाएं अधिक प्रभावी भूमिका निभाने लगें। इसके अलावा शिया-सुन्नी-कुर्द राजनीतिक विभाजन, भ्रष्टाचार और आर्थिक कठिनाइयां अभी भी देश की स्थिरता के लिए बड़ी बाधाएं बनी हुई हैं। यदि शक्ति का रिक्त स्थान पैदा होता है तो क्षेत्रीय शक्तियां उसका लाभ उठाने का प्रयास कर सकती हैं। -**राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

सादा जीवन, उच्च विचार

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी

भारतीय संस्कृति का मूल दर्शन सदैव ''सादा जीवन, उच्च विचार'' रहा है। आधुनिक युग में विज्ञान और तकनीक ने मानव जीवन को अभूतपूर्व सुविधाएं प्रदान की हैं, लेकिन इसके साथ भौतिकवाद, प्रतिस्पर्धा और असीमित इच्छाओं ने तनाव, असंतोष और मानसिक अशांति को भी जन्म दिया है। धन, पद और प्रतिष्ठा की अंधी दौड़ में व्यक्ति अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य और आंतरिक सुख से दूर होता जा रहा है। मानव ने अपनी बौद्धिक क्षमता के बल पर विकास की नई ऊंचाइयों को छुआ है, परंतु प्रकृति के अंधाधुंध दोहन ने जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर चुनौतियां भी पैदा कर दी हैं। आज प्राकृतिक आपदाओं और पर्यावरणीय संकटों के बीच यह एहसास गहराता जा रहा है कि संतुलित और सरल जीवन ही स्थायी विकास का आधार हो सकता है। सादा जीवन का अर्थ अभाव में जीना नहीं, बल्कि आवश्यकताओं को सीमित रखना और लालच पर नियंत्रण रखना है। जब व्यक्ति अपनी जरूरतों और इच्छाओं के बीच संतुलन स्थापित करता है, तब उसके जीवन में संतोष, स्पष्टता और मानसिक शांति का विकास होता है। यही सादगी उसे बेहतर निर्णय लेने और जीवन के वास्तविक मूल्यों को समझने की प्रेरणा देती है। भारतीय दर्शन, विशेषकर भगवद्गीता, भी संयम और सादगी को जीवन की सफलता का आधार मानती है। जो व्यक्ति सादा जीवन अपनाता है, वह न केवल स्वयं के लिए बल्कि समाज के लिए भी सकारात्मक वातावरण का निर्माण करता है। उसके भीतर दया, विनम्रता, सहिष्णुता और मानवता जैसे गुण विकसित होते हैं, जबकि अहंकार, द्वेष और लालच जैसे विकार स्वतः दूर होने लगते हैं। महान दार्शनिक कन्फ्यूशियस ने कहा था कि जीवन अत्यंत सरल है, किंतु मनुष्य स्वयं उसे जटिल बना लेता है। आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में यह विचार और भी प्रासंगिक हो जाता है। वस्तुओं, इच्छाओं और अपेक्षाओं की अनावश्यक भीड़ व्यक्ति की एकाग्रता को भंग करती है और उसे अपने वास्तविक लक्ष्यों से दूर ले जाती है। इसलिए समय-समय पर अपनी आवश्यकताओं का पुनर्मूल्यांकन करना आवश्यक है। सादगी का एक महत्वपूर्ण लाभ यह भी है कि व्यक्ति अपने संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना सीखता है। कई बार जो वस्तुएं आज सुविधा प्रतीत होती हैं, वही भविष्य में बोझ बन जाती हैं। इसलिए जीवन को अनावश्यक संग्रह के बजाय उपयोगिता और संतुलन के आधार पर व्यवस्थित करना अधिक बुद्धिमानी है। सादा जीवन, उच्च विचार केवल व्यक्तिगत आचरण का सिद्धांत नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और नैतिक विकास का भी आधार है। यह हमें सिखाता है कि सच्ची खुशी भौतिक संपन्नता में नहीं, बल्कि सकारात्मक सोच, अच्छे कर्म और आत्मसंतोष में निहित है। जब व्यक्ति अपने विचारों को श्रेष्ठ बनाता है, तभी उसका जीवन भी सार्थक और प्रेरणादायक बनता है। आज के उपभोक्तावादी दौर में भारतीय संस्कृति का यह संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। यदि समाज सादगी, संयम और उच्च नैतिक मूल्यों को अपनाए, तो न केवल व्यक्तिगत जीवन सुखमय बनेगा बल्कि पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक संतुलन और मानवीय संवेदनाओं को भी नई मजबूती मिलेगी। वास्तव में, सादा जीवन और उच्च विचार ही एक संतुलित, शांतिपूर्ण और समृद्ध समाज की सबसे मजबूत आधारशिला हैं।

स्वाभिमान और विनम्रता का संतुलन ही व्यक्ति की वास्तविक श्रेष्ठता : आचार्य प्रसन्न सागरजी महाराज

दाहोद में आज होगा आचार्य श्री सुनील सागरजी महाराज एवं आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज का भव्य मिलन

मीराखेड़ी (दाहोद), गुजरात। अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय श्री पियूष सागरजी महाराज ससंघ की अहिंसा संस्कार पदयात्रा दीक्षा भूमि परतापुर से पुष्पगिरी की ओर निरंतर अग्रसर है। इसी क्रम में मीराखेड़ी में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने कहा कि ''स्वाभिमान और स्वाभिमानी वही श्रेष्ठ है, जिसकी वाणी और व्यवहार में मधुरता तथा स्वभाव में विनम्रता हो।'' उन्होंने कहा कि जिस प्रकार वह धातु जो अग्नि में तपाए बिना ही मुड़ जाती है और वह लकड़ी जो बिना पानी में डाले ही झुक जाती है, उसी प्रकार विनय, विवेक, समझदारी और बुद्धिमत्ता से कार्य करने वाला व्यक्ति जीवन में प्रायः असफल नहीं होता। आचार्य श्री ने कहा कि विनम्रता का अर्थ आत्मविश्वास की कमी नहीं है और न ही स्वाभिमान का अर्थ केवल अत्यधिक आत्मविश्वास होना है। वास्तविक स्वाभिमान वही है, जिसमें व्यक्ति अपनी सीमाओं और कमजोरियों को पहचानते हुए अपने सिद्धांतों और मूल्यों पर अडिग बना रहे। यदि आत्मविश्वास के साथ विनम्रता जुड़ जाए, तो व्यक्ति किसी भी कठिन परिस्थिति का सहजता से सामना कर सकता है। उन्होंने कहा कि कई बार कुछ लोगों के कार्य, कर्तव्यनिष्ठा और दूरदर्शी निर्णयों का महत्व समाज को तब समझ आता है, जब उनके सकारात्मक परिणाम सामने आते हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि ''अंगार पर राख जम जाने से उसे बुझा हुआ नहीं समझना चाहिए।'' अपने प्रवचन में आचार्य श्री ने जीवन की सफलता में बाधक छह प्रमुख दोषों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि अत्यधिक अहंकार, अति वाचालता, आवश्यकता से अधिक होशियारी दिखाना, दूसरों को मूर्ख समझना, केवल अपने स्वार्थ के बारे में सोचना तथा मित्र-द्रोही बनकर जीवन जीना व्यक्ति की उन्नति में सबसे बड़ी रुकावट बन सकते हैं। इन दोषों से दूर रहकर ही मनुष्य जीवन का वास्तविक आनंद प्राप्त कर सकता है।

स्थापना : 1957

॥ अहिंसा परमो धर्मः ॥

ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन आचार्य धरसेन के प्रयासों से
भगवान महावीर की दिव्य देशना को आचार्य पुष्पदंत-भूतबली द्वारा
'षट्-खण्डागम' ग्रन्थ के रूप में सर्वप्रथम लिपिबद्ध करने के उपलक्ष्य में

राजस्थान जैन साहित्य परिषद्, जयपुर

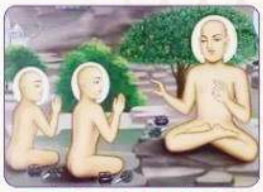

द्वारा आयोजित त्रि-दिवसीय

श्रुत पंचमी महामंगल महोत्सव

दिनांक 17,18, एवं 19 जून 2026

मंगल आशीर्वाद
राजकीय अतिथि, राष्ट्रसंत आचार्य श्री 108 सुन्दर सागर जी महाराज ससंघ

वात्सल्य आमंत्रण

श्रुतपंचमी महोत्सव! षट् खण्डागम रथयात्रा

धर्म प्रेमी साधर्मी बन्धुओं, जय जिनेन्द्र!
ज्ञान ही मोक्ष का मार्ग है और हमारी जिनवाणी उस मार्ग का दीपक। आचार्य श्री भूतबली और श्री पुष्पदन्त भगवन्त द्वारा रचित महान् ग्रन्थ षट्खण्डागम की रचना के परिप्रेक्ष्य में हम सब मिलकर श्रुत पंचमी के अवसर पर ग्रन्थराज को रथ में विराजमान कर नगर भ्रमण का कार्यक्रम प्रतिवर्ष करते आ रहे हैं। प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी इस ज्ञान रथ की प्रभावना के साक्षी बनने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

सुद पंचमी दिणे सद्धम्माणं जिणवाणी-पुयणं मंगलं आयरिय-पुप्फदंत-भूदबली-रइयं, षट् खण्डागम जयउ सभी साधर्मी बन्धुओं से विनम्र आग्रह है जब यह ज्ञान रथ आपके गृह अथवा जिनालय के समीप से प्रस्थान करे तो अपनी श्रद्धा के पुष्प अर्पित करते हुए आरती उतारें तत्पश्चात् इस भव्य रथयात्रा महोत्सव की धर्म सभा समारोह में सम्मिलित होकर ज्ञान तीर्थ की महत्ता को जन जन तक पहुँचाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करें।

जिनवाणी सारथी

मुख्य अतिथि

विशिष्ट अतिथि

जिनवाणी सेवक

मांगलिक कार्यक्रम

श्रुतोपदेश दिवस

ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया
बुधवार, 17 जून 2026 रात्रि 7.30 बजे

विचार गोष्ठी

मुख्य वक्ता- डॉ. कमलेश जी जैन, • जयपुर
(अध्यक्ष-जैन दर्शन प्राकृत विद्या शाखा केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर)
विषय - सम्यक दर्शन में श्रुत ज्ञान का महत्त्व
मुख्य अतिथि - सेठी श्री अशोक जी चाँदवाड़
कीर्तिनगर, टोंक रोड, जयपुर
गोष्ठी संयोजक- श्री सुदर्शन कुमार जी पाटनी
संचालन- पं. रमेश कुमार जी गंगवाल
स्थान : श्री जैन मन्दिर, कीर्तिनगर, टोंक रोड, जयपुर
(स्थानीय संयोजक : प्रेमचन्द जी गंगवाल)
अध्यक्ष : श्री प्रेम कुमार जी रांवका
मंत्री : श्री जगदीश जी जैन

सेठी श्री अशोक जी चाँदवाड़

श्रुत आराधना दिवस

श्रुत स्कन्ध विधान पूजा

ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी
गुरुवार, 18 जून 2026 प्रातः 7.00 बजे

श्रुत स्कन्ध विधान

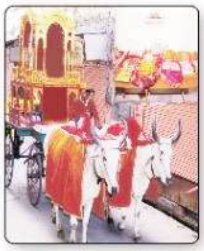

(साज- बाजों के साथ)
विधानाचार्य
पं. श्री रमेश कुमार जी गंगवाल
स्थानीय संयोजक
प्रदीप कुमार चाँदवाड़
स्थान : श्री दिगम्बर जैन मंदिर,
जनकपुरी ज्योति नगर, इमली वाला फाटक, जयपुर
अध्यक्ष : श्री वृद्धि प्रकाश जी छाबड़ा
मंत्री : श्री देवेन्द्र जी कासलीवाल

श्रुत वंदना महोत्सव

विशाल जिनवाणी रथयात्रा

(षट्-खण्डागम ग्रन्थ) रथयात्रा

ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी, शुक्रवार, 19 जून 2026 प्रातः 7.00 बजे

जिनवाणी रथयात्रा मार्ग

जिनवाणी रथयात्रा श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर दड़ा बाजार घी वालों का रास्ता से प्रारम्भ होकर हल्दियों का रास्ता, गोलियों की धर्मशाला, चौबीस महाराज का मन्दिर जौहरी बाजार, गोपाल जी का रास्ता, लालजी सांड का रास्ता व मनिहारों का रास्ता होते हुए श्री दिगम्बर जैन मंदिर संघीजी में पहुँच कर धर्मसभा में परिवर्तित होगी।
रथयात्रा में झांकी, भजन गायक, महिला मण्डलों द्वारा भजन तथा शास्त्र सजाओ प्रतियोगिता के प्रतिभागी रथयात्रा में सम्मिलित होकर चलेंगे।
रथयात्रा संयोजक : श्रीमती ममता संघी, श्रीमान् नवरत्न पाटनी

शास्त्र सजाओ प्रतियोगिता

निर्णायक मण्डल द्वारा घोषित प्रथम, द्वितीय, तृतीय आकर्षक पुरस्कारों के अलावा सभी को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये जावेंगे।
अतः अधिक से अधिक श्रावक-श्राविका व बालक-बालिकाएँ, आबाल वृद्ध सभी इस प्रतियोगिता में भाग लेकर पुण्यार्जन करें।
श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर दड़ा बाजार, घीवालों के रास्ते से शास्त्र जी को शिरोधार्य कर रथयात्रा के साथ चलें।
प्रतियोगिता निर्णायक मण्डल :- श्रीमती डॉ. माधुरी जी जैन, श्रीमती मोना जी पाटनी, श्रीमती सुनीता जी जैन

दीप प्रज्ज्वलनकर्ता
डॉ. राजकुमारी जी
सुपुत्री पं. श्री ज्ञानचन्द जी बिल्टी वाले
मालवीय नगर, जयपुर

शास्त्र सजाओ प्रतियोगिता पुरस्कार प्रदाता
श्री लोकेन्द्र जी-श्रीमती सोनिका जी, योगेन्द्र जी-आयुषी जी, रिधान जी एवं समस्त गंगवाल परिवार
मनिहारों का रास्ता, जयपुर

रथयात्रा में सम्मिलित बालक-बालिकाओं को पुरस्कार प्रदाता
श्रीमान् नवीन कुमार जी-सपना जी
(बिल्टी वाले)
मंगल विहार विस्तार, जयपुर

ध्वजवाहक
श्री लोकेन्द्र कुमार गंगवाल, जयपुर
आईडीएफसी बैंक स्टेट हैड-दिल्ली

धर्मध्वज धारक
श्री रिधान गंगवाल
(इण्डिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड एवं एशियन वर्ल्ड रिकार्डधारी)
श्री सुयश खण्डाका
(पुत्र श्री अशोक जी खण्डाका, जयपुर)
श्री विधान खिन्दूका
(पुत्र श्री रजत जी-कुसुम जी खिन्दूका, एडवोकेट)
श्री ज्ञान चन्द जी जैन
(मोहनबाड़ी, जयपुर)

चंवर धारक
1. आत्मिक जैन 2. भव्य संघी

सह संयोजक : उदयभान जैन, अनिल टोंग्या, श्रीमती मधु हाडा, श्रीमती ममता संघी, श्रीमती ऋचा जैन, श्रीमती सुलोचना चाँदवाड़, श्रीमती रमा जैन बिलाला, श्रीमती वीना देवी डिग्गीवाल

संरक्षक : डॉ. श्री प्रेमचन्द्र जी रांवका, श्री महेश चन्द जी चांदवाड़, सी.ए. श्री शांतिलाल जी गंगवाल, डॉ. श्री विमल कुमार जी जैन शास्त्री

विनीत :

अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	मंत्री	संयुक्त मंत्री	अर्थ मंत्री	महोत्सव संयोजक
पदम चन्द जैन बिलाला	राजेन्द्र कुमार पापड़ीवाल	महावीर कुमार जैन चाँदवाड़	रमेश कुमार गंगवाल	प्रद्युम्न पाटनी	पं. रमेश कुमार गंगवाल
मो. 9314024888	मो. 9214419945	मो. 8505030011	मो. 9414409133	मो. 9414277805	सी.ए. विकास जैन

कार्यकारिणी सदस्य :- डॉ. योगेश टोडरवा, प्रेमचन्द गंगवाल, सुधीर कुमार काशलीवाल, सुदर्शन पाटनी, विपिन कुमार बज
विशेष आमंत्रित सदस्य :- हीराचन्द बैद, हरकचन्द बड़जात्या, उदयभान जैन, अनिल टोंग्या, नरेन्द्र ठोलिया, प्रदीप ठोलिया, निर्मल गोधा, कैलाश चन्द मल्हैया, डॉ. अरविन्द कुमार जैन, सी.ए. विकास जैन, नवरत्न पाटनी, प्रदीप चांदवाड़

राजस्थान जैन साहित्य परिषद्, जयपुर

नोट-जिनवाणी रथयात्रा आपके घर के नजदीक से निकलती है तो मंगल आरती करके पुण्यार्जन अवश्य करें।

श्रुत पंचमी विशेष : णमोकार महामंत्र से मंगलाचरित जैन कर्म-दर्शन का अमर ग्रंथ "षट्खण्डागम"

दिगम्बर जैन परम्परा का सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रामाणिक ग्रंथ ''षट्खण्डागम'' जैन कर्म-दर्शन का आधारभूत शास्त्र माना जाता है। आचार्य पुष्पदंत एवं भूतबलि द्वारा रचित इस महान ग्रंथ के प्रारंभ में विश्ववंदनीय णमोकार महामंत्र को मंगलाचरण के रूप में स्थान दिया गया है।

णमो अरिहंताणं।
णमो सिद्धाणं।
णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं।
णमो लोए सव्वसाहूणं॥

एसो पंच णमोकारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवई मंगलं॥

इस महान ग्रंथ की रचना एवं संरक्षण की स्मृति में दिगम्बर जैन समाज प्रतिवर्ष ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को श्रुत पंचमी का पावन पर्व श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनाता है।

षट्खण्डागम का परिचय

'षट्खण्डागम' शब्द तीन पदों–षट् + खण्ड + आगम–से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है छह खण्डों में विभाजित आगम। यह ग्रंथ पूर्वाचार्यों से प्राप्त श्रुत परम्परा पर आधारित है, जिसका मूल स्रोत आचार्य धरसेन माने जाते हैं। इसकी रचना लगभग पहली-दूसरी शताब्दी ईस्वी के आसपास मानी जाती है।

षट्खण्डागम की रचना

आचार्य धरसेन अष्टांग महानिमित्त के प्रकाण्ड ज्ञाता थे। वृद्धावस्था में उन्होंने अनुभव किया कि अवसर्पिणी काल के प्रभाव से श्रुतज्ञान का निरंतर ह्रास हो रहा है। उन्हें चिंता हुई कि यदि उनके पास सुरक्षित ज्ञान योग्य शिष्यों तक नहीं पहुंचा तो वह उनके साथ ही लुप्त हो जाएगा। इसी उद्देश्य से उन्होंने वेणाकतटपुर स्थित विशाल मुनि-संघ के पास एक ब्रह्मचारी के माध्यम से संदेश भेजा, जिसमें श्रुत को ग्रहण एवं धारण करने में समर्थ दो तीक्ष्णबुद्धि मुनियों को उनके पास भेजने का अनुरोध किया गया।

अधिक अक्षर और हीन अक्षर का प्रसंग

मुनि-संघ ने दो अत्यंत विनयी, शीलवान एवं मेधावी मुनियों को गिरिनगर भेजा। आचार्य धरसेन ने उनकी परीक्षा लेने के लिए एक को अधिक अक्षरों वाला तथा दूसरे को हीन अक्षरों वाला विद्यामंत्र प्रदान किया और दो उपवास के साथ उसकी साधना करने का निर्देश दिया। दोनों मुनि भगवान नेमिनाथ की सिद्धभूमि पर जाकर विधिपूर्वक साधना में लीन हो गए। साधना पूर्ण होने पर एक मुनि के समक्ष एक नेत्र वाली देवी तथा दूसरे के समक्ष बड़े दांतों वाली देवी प्रकट हुई। मुनियों ने समझ लिया कि उनके मंत्रों में क्रमशः एक अक्षर कम और एक अक्षर अधिक है। उन्होंने मंत्रों को शुद्ध कर पुनः अनुष्ठान किया और सफलता प्राप्त की।

पुष्पदंत एवं भूतबलि नामकरण

मुनियों की सूक्ष्म बुद्धि और पात्रता से संतुष्ट होकर आचार्य धरसेन ने उन्हें सिद्धांत का अध्ययन कराया। अध्ययन आषाढ़ शुक्ल एकादशी को पूर्ण हुआ। उस अवसर पर देवों ने दोनों मुनियों की पूजा की। जिस मुनि के दांत देवों द्वारा कुंद पुष्प के समान सुंदर

बना दिए गए, उनका नाम 'पुष्पदंत' रखा गया। दूसरे मुनि की भूत जाति के देवों द्वारा विशेष पूजा किए जाने के कारण उनका नाम 'भूतबलि' घोषित किया गया। बाद में आचार्य पुष्पदंत ने अपने शिष्य जिनपालित को शिक्षित करने के उद्देश्य से महाकर्मप्रकृति का छह खण्डों में उपसंहार करने का विचार किया और सत्प्ररूपणा के 177 सूत्रों की रचना की। आगे चलकर आचार्य भूतबलि ने द्रव्यप्रमाणानुगम से प्रारंभ करते हुए शेष ग्रंथ का विस्तार किया।

विषय-वस्तु

षट्खण्डागम मुख्यतः जैन कर्म-सिद्धांत का गहन एवं वैज्ञानिक विवेचन प्रस्तुत करता है। इसमें निम्न विषयों का विस्तार से वर्णन है...

जीव (आत्मा) का स्वरूप
कर्मों का बंध
कर्मों के प्रकार
कर्मों का उदय एवं फल
बंधन से मुक्ति का मार्ग
आध्यात्मिक विकास के चरण
षट्खण्डागम के छह खण्ड

पूर्ववर्ती सूत्रों सहित लगभग छह हजार श्लोकों के इस महान ग्रंथ के छह प्रमुख भाग हैं...

जीवस्थान
क्षुद्रकबन्ध
बन्धस्वामित्वविचय
वेदना
वर्गणा
महाबन्ध

आचार्य भूतबलि ने इन सूत्रों को पुस्तकबद्ध कर ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन चतुर्विध संघ की उपस्थिति में विधिपूर्वक महापूजा सम्पन्न की। यही दिन आगे चलकर श्रुत पंचमी के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

धवला टीका

षट्खण्डागम पर आचार्य वीरसेन ने प्रसिद्ध 'धवला टीका' की रचना की, जिसे जैन साहित्य की सर्वश्रेष्ठ व्याख्याओं में गिना जाता है। बाद में आचार्य जिनसेन ने भी इस महान कार्य को आगे बढ़ाया।

जैन दर्शन में महत्व

दिगम्बर जैन परम्परा में षट्खण्डागम को सर्वाधिक प्रामाणिक दार्शनिक ग्रंथों में स्थान प्राप्त है। जैन कर्मवाद को समझने के लिए इसे मूल स्रोत माना जाता है। आत्मा और कर्म के संबंध का जितना सूक्ष्म एवं व्यापक विश्लेषण इस ग्रंथ में मिलता है, वह जैन आगम साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

राजस्थान जैन साहित्य परिषद्, जयपुर की गौरवशाली परम्परा

राजस्थान जैन साहित्य परिषद्, जयपुर द्वारा श्रुत पंचमी के पावन अवसर पर विगत छह दशकों से ऐतिहासिक श्रुत रथयात्रा सहित त्रिदिवसीय भव्य महोत्सव का निरंतर आयोजन किया जाता रहा है। यह महोत्सव जैन श्रुत परम्परा के संरक्षण, संवर्द्धन और गौरवगान का अनुपम माध्यम बनकर समाज में ज्ञान, संस्कृति और श्रद्धा का प्रकाश प्रसारित कर रहा है।

पदम जैन बिलाला: अध्यक्ष
राजस्थान जैन साहित्य परिषद्, जयपुर

जयश्री ज्वेलर्स के सहयोग से वाणी चेस क्लब का 15 दिवसीय नि:शुल्क शतरंज प्रशिक्षण शिविर संपन्न

प्रतिभागी बच्चों को प्रमाण-पत्र एवं शतरंज बोर्ड भेंट कर किया सम्मानित

जयपुर. शाबाश इंडिया

जयश्री ज्वेलर्स, मानसरोवर के सहयोग से वाणी चेस क्लब द्वारा आयोजित 15 दिवसीय नि:शुल्क शतरंज प्रशिक्षण शिविर का भव्य समापन समारोह उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। शिविर में 25 बच्चों ने भाग लेकर शतरंज की विभिन्न तकनीकों, रणनीतियों एवं जीवनोपयोगी गुणों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। समापन अवसर पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र एवं शतरंज बोर्ड भेंट कर सम्मानित किया गया तथा उनके उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी गईं। कार्यक्रम में जयपुर शहर की सांसद डॉ. मंजू शर्मा का शुभकामना संदेश पढ़कर सुनाया गया। अपरिहार्य कारणों से उनकी अनुपस्थिति में वूमेन पावर सोशलिटी फाउंडेशन के राष्ट्रीय संयोजक संतोष कुमार ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। विशिष्ट अतिथियों में मीना देवी मेमोरियल ट्रस्ट के संस्थापक ज्ञानचंद जैन, भाजपा मानसरोवर मंडल अध्यक्ष विपिन सिंगल तथा चेस पेरेंट्स एसोसिएशन राजस्थान के अध्यक्ष अमित गुप्ता शामिल रहे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि संतोष कुमार, शतरंज प्रशिक्षक भगवती प्रसाद शर्मा, विक्रम सिंह, एडवोकेट पियूष शर्मा, दीपक राव एवं अन्य अतिथियों का स्वागत जयश्री ज्वेलर्स के मैनेजर संदीप सिंह तथा वाणी चेस क्लब के अध्यक्ष जिनेश कुमार जैन द्वारा साफा, माला, शॉल एवं स्मृति-चिन्ह भेंट कर किया गया। वाणी चेस क्लब के अध्यक्ष जिनेश कुमार जैन एवं ऋतु जैन ने बताया कि क्लब अब तक लगभग 10 नि:शुल्क शतरंज प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर चुका है तथा पिछले एक माह में 120 से अधिक बच्चों को निशुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। उन्होंने कहा कि क्लब का उद्देश्य केवल शतरंज सिखाना नहीं, बल्कि बच्चों में अनुशासन, धैर्य, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सकारात्मक सोच का विकास करना भी है। उन्होंने बताया कि इस शिविर की परिकल्पना एवं संचालन में वाणी जैन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कम आयु में बच्चों के व्यक्तित्व

विकास और शतरंज के प्रचार-प्रसार के प्रति उनका समर्पण प्रेरणादायक है। कार्यक्रम का संचालन युवा अध्यक्ष वाणी जैन ने किया। उन्होंने कहा कि शतरंज केवल एक खेल नहीं, बल्कि जीवन में सही निर्णय लेने, धैर्य बनाए रखने और चुनौतियों का सामना करने की कला सिखाता है। उन्होंने भविष्य में भी ऐसे नि:शुल्क प्रशिक्षण शिविर निरंतर आयोजित करने का संकल्प व्यक्त किया। इस अवसर पर जयश्री ज्वेलर्स की एचआर आयुषी सिंह एवं सेल्स एग्जीक्यूटिव शोभा जांगिड़ ने शतरंज के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वाणी चेस क्लब की इस सामाजिक पहल की सराहना की। उन्होंने कहा कि जयश्री ज्वेलर्स भविष्य में भी ऐसे सामाजिक एवं शैक्षणिक अभियानों को हरसंभव सहयोग प्रदान करता रहेगा। कार्यक्रम में जयश्री ज्वेलर्स, मानसरोवर परिवार का विशेष आभार व्यक्त किया गया, जिन्होंने शिविर एवं समापन समारोह के लिए अपना परिसर नि:शुल्क उपलब्ध कराया। साथ ही उनकी समर्पित स्टाफ टीम ने पूरे आयोजन के दौरान उत्कृष्ट व्यवस्थाएं और आत्मीय सहयोग प्रदान किया, जिससे कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। समारोह का विशेष आकर्षण ज्योतिषाचार्य पंडित दिनेश शर्मा द्वारा माउथ ऑर्गन पर प्रस्तुत 'वंदे मातरम्' और 'हम होंगे कामयाब' की मनमोहक प्रस्तुति रही, जिसने उपस्थित सभी लोगों को भावविभोर कर दिया और पूरे वातावरण को देशभक्ति एवं उत्साह से भर दिया। कार्यक्रम में भागचंद-संतोष जैन, सुनील जैन, प्रभुलाल बेरवा, प्रेमचंद जैन, अजय-मोना जैन, मनीष-मीनू गोधा सहित अनेक समाजसेवी, अभिभावक एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। अंत में वाणी चेस क्लब के अध्यक्ष जिनेश कुमार जैन ने सभी प्रशिक्षकों, कोचों, अभिभावकों, सहयोगी संस्थाओं, समाजसेवियों, शुभचिंतकों एवं अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि शिविर की सफलता सभी के सामूहिक सहयोग और समर्पण का परिणाम है।

धर्म और विज्ञान

धर्म और विज्ञान मानव जीवन के दो अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम हैं। सामान्यतः यह धारणा प्रचलित है कि धर्म आस्था पर आधारित है, जबकि विज्ञान तर्क, प्रयोग और प्रमाण पर। इसी कारण अनेक लोग दोनों को एक-दूसरे का विरोधी मानते हैं। किंतु यदि गहराई से विचार किया जाए तो स्पष्ट होता है कि दोनों का मूल उद्देश्य मानव जीवन को बेहतर बनाना तथा सत्य की खोज करना है। विज्ञान प्रकृति के नियमों और घटनाओं को समझने का प्रयास करता है। वह निरीक्षण, प्रयोग और प्रमाण के आधार पर ज्ञान का विस्तार करता है। विज्ञान की बदौलत चिकित्सा, संचार, परिवहन, अंतरिक्ष अनुसंधान और आधुनिक तकनीक के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई है, जिससे मानव जीवन अधिक सुविधाजनक, सुरक्षित और समृद्ध बना है। दूसरी ओर, धर्म मनुष्य को नैतिकता, सदाचार, करुणा, प्रेम, आत्मसंयम और मानवीय मूल्यों का मार्ग दिखाता है। धर्म यह सिखाता है कि जीवन केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका एक आध्यात्मिक और नैतिक पक्ष भी है। यह व्यक्ति के भीतर सेवा, परोपकार, सहिष्णुता और मानवता की भावना का विकास करता है। विज्ञान हमें बताता है कि 'क्या' और 'कैसे' होता है, जबकि धर्म यह समझाने का प्रयास करता है कि 'क्यों' और 'किस उद्देश्य से' जीवन जिया जाना चाहिए। विज्ञान बाहरी संसार के रहस्यों को उद्घाटित करता है, वहीं धर्म मनुष्य के आंतरिक संसार को प्रकाशित करता है। इस दृष्टि से दोनों की भूमिकाएँ अलग होते हुए भी परस्पर पूरक हैं। जब धर्म अंधविश्वास, कट्टरता और संकीर्णता से ऊपर उठकर मानव कल्याण का मार्ग अपनाता है तथा विज्ञान नैतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं के साथ आगे बढ़ता है, तब समाज का संतुलित और समग्र विकास संभव होता है। विज्ञान के बिना भौतिक प्रगति अधूरी है और धर्म के बिना जीवन में नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों का अभाव उत्पन्न हो सकता है। आज के युग में आवश्यकता इस बात की है कि धर्म और विज्ञान को परस्पर विरोधी मानने के बजाय उनके समन्वय को समझा जाए। विज्ञान मानव को बाहरी दुनिया को जीतने की शक्ति देता है, जबकि धर्म उसे स्वयं पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। दोनों का संतुलित समागम ही एक ऐसे समाज की रचना कर सकता है, जो ज्ञानवान होने के साथ-साथ संवेदनशील और नैतिक भी हो। अतः यह कहा जा सकता है कि धर्म और विज्ञान मानव जीवन के दो ऐसे सशक्त स्तंभ हैं, जो मिलकर ज्ञान, विवेक, नैतिकता और विकास का संतुलन स्थापित करते हैं। मानवता के उज्वल भविष्य के लिए इन दोनों के बीच समन्वय और सामंजस्य अत्यंत आवश्यक है।

– अनिल माथुर
ज्वाला विहार, जोधपुर

सर्व समाज सेवा समिति ने जेके लोन ब्लड बैंक में किया सेवा कार्य

रक्तदाताओं की सुविधा के लिए पानी के कैंपर एवं थर्मल जग किए भेंट, रक्तदान के प्रति जागरूकता का दिया संदेश

जयपुर. शाबाश इंडिया

सर्व समाज सेवा समिति द्वारा जनसेवा के उद्देश्य से जेके लोन ब्लड बैंक में सेवा कार्य आयोजित किया गया। इस दौरान समिति की ओर से स्वैच्छिक रक्तदाताओं को प्रोत्साहित करने एवं उनकी सुविधा के लिए पांच पानी के कैंपर तथा एक मिल्टन इनर स्टेनलेस स्टील इंसुलेटेड थर्मल जग भेंट किया गया। समिति के सदस्य डॉ. अशोक दुबे ने कहा कि ''रक्तदान महादान है और जल ही जीवन है।'' उन्होंने बताया कि रक्तदान मानवता की सेवा का एक अद्वितीय अवसर है। रक्तदान शिविरों के आयोजन के साथ-साथ भीषण गर्मी में जनहित के लिए शीतल जल की व्यवस्था करना भी अत्यंत सराहनीय और आवश्यक सेवा है। उन्होंने कहा कि रक्तदान और जल सेवा दोनों ही मानव जीवन को बचाने और समाज के कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते

हैं। उन्होंने स्वैच्छिक रक्तदाताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि रक्त की आवश्यकता के प्रति जागरूकता बढ़ाना सामाजिक संगठनों और कार्यकर्ताओं का भी दायित्व है। इसी भावना के तहत समिति द्वारा रक्तदाताओं की सुविधा के लिए यह सामग्री उपलब्ध कराई गई। साथ ही उन्होंने प्लास्टिक की थैलियों में गर्म चाय या अन्य पेय पदार्थों के सेवन से होने वाले स्वास्थ्य दुष्प्रभावों के प्रति भी लोगों को जागरूक रहने की सलाह दी। इस अवसर पर जेके लोन ब्लड बैंक के एमओआईसी डॉ. अंकित शर्मा, डॉ. सुनीता, रतन लाल सैनी, अजय बराला, सुरेश सैनी एवं ज्ञान प्रकाश उपस्थित रहे। डॉ. अंकित शर्मा ने थैलेसीमिया के बढ़ते मरीजों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि दुर्घटनाओं, गंभीर बीमारियों और आपातकालीन परिस्थितियों में रक्त की भारी आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि किसी जरूरतमंद के लिए एक यूनिट रक्त जीवनदान के समान हो सकता है। साथ ही नियमित रक्तदान से शरीर में नया रक्त बनने की प्रक्रिया सक्रिय रहती है और हृदय स्वास्थ्य को भी लाभ मिलता है। उन्होंने कहा कि ''रक्तदान महादान है और जल ही जीवन है। जीवन बचाने वाले इन दोनों पुनीत कार्यों–रक्तदान और शीतल जल सेवा–को साथ लेकर चलना मानवता के प्रति हमारी सच्ची सेवा है।'' कार्यक्रम में समिति के सदस्य रामचंद्र सैनी, संदीप बानूड़ा, राजेश भट्ट, दीपक मिश्रा, नरेश शर्मा (जयपुर एजुकेशन सेंटर), विवेक शर्मा (नर्सिंग ऑफिसर), राजेंद्र उपाध्याय, राहुल, विनोद अवध शर्मा एवं डॉ. अशोक दुबे सहित अन्य सदस्यों का विशेष योगदान रहा।

युवा परिषद की संभागीय कार्यशाला एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न

स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में प्रत्येक शाखा से 50 पौधे लगाने का आह्वान

उदयपुर. शाबाश इंडिया

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद, उदयपुर संभाग के पदाधिकारियों की संभागीय कार्यशाला एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम बलीचा स्थित श्री सुप्रकाशमती ध्यान केन्द्र (ध्यानोदय केन्द्र) में आयोजित किया गया। कार्यक्रम युवा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन (जयपुर) के मुख्य आतिथ्य तथा राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री एवं राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जैन (जयपुर) की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। राजस्थान प्रदेश उपाध्यक्ष धनपाल जैन (उदयपुर) ने बताया कि कार्यक्रम से पूर्व सभी पदाधिकारियों ने मूलनायक भगवान शांतिनाथ के दर्शन किए, अभिषेक एवं शांतिधारा में सहभागिता निभाई तथा निर्वाण लाडू अर्पित किया। इसके बाद कार्यशाला का शुभारंभ उपस्थित अतिथियों एवं पदाधिकारियों द्वारा तीन बार णमोकार मंत्र के उच्चारण के साथ किया गया। आयोजन समिति एवं युवा परिषद उदयपुर की ओर से अतिथियों का माला एवं दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया गया। स्वागत उद्बोधन में प्रदेश उपाध्यक्ष धनपाल जैन ने सभी अतिथियों एवं पदाधिकारियों का अभिनंदन किया। मुख्य अतिथि उदयभान जैन ने अपने संबोधन में संगठन की 50 वर्षों की गौरवशाली यात्रा और विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए स्वर्ण जयंती वर्ष के अंतर्गत विशेष कार्यक्रम आयोजित करने का आह्वान किया। उन्होंने प्रत्येक शाखा से कम से कम 50 पौधे लगाने का आग्रह करते हुए इसे पर्यावरण संरक्षण और संगठन के स्वर्णिम वर्ष को सार्थक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर दिए जाने वाले

पुरस्कारों एवं सम्मान योजनाओं की भी जानकारी दी। प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जैन ने सभी उपस्थित पदाधिकारियों का स्वागत करते हुए कहा कि युवा परिषद स्वर्ण जयंती वर्ष को सेवा, संस्कार और सामाजिक सरोकारों के साथ मना रही है। उन्होंने बताया कि परम पूज्य प्रज्ञा श्रमणी चंदनामती माताजी के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में उदयपुर जिला शाखा द्वारा वृक्षारोपण कर उन्हें विनयांजलि अर्पित की गई। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि आगामी 6 सितंबर 2026 को जयपुर महानगर में युवा परिषद का स्वर्ण जयंती महोत्सव भव्य रूप से आयोजित किया जाएगा, जिसमें युवा परिषद के परामर्शक पीठाधीश स्वस्तिश्री रविन्द्र कीर्ति स्वामीजी महाराज तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जीवन प्रकाश जैन विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। उन्होंने सभी शाखाओं से अधिकाधिक संख्या में सहभागिता सुनिश्चित करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में प्रदेश संयुक्त महामंत्री सचिन गनोड़िया, संगठन मंत्री विपिन जैन (डूंगरपुर), उदयपुर जिला अध्यक्ष अरुण लुणदिया, महामंत्री मनोज जैन, विकास जैन किकावत (ऋषभदेव), जतिन जैन (खैरवाड़ा), प्रतीक जैन (खैरवाड़ा), धर्मेंद्र वोरा (डूंगरपुर), राकेश जैन (सलूम्बर) तथा कार्तिक जैन (फलासिया) सहित अनेक पदाधिकारियों ने संगठनात्मक विचार व्यक्त किए और स्वर्ण जयंती महोत्सव को सफल बनाने का संकल्प दोहराया। इस अवसर पर योगेश गांगावत (ऋषभदेव), रजनीश जैन (उदयपुर), संगम बखरिया (डूंगरपुर), राजन जैन (डूंगरपुर), रतनपाल जैन (हथाई), शीतल जैन (रामगढ़) तथा आशीष गांधी (ऋषभदेव) सहित अनेक पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान सभी पदाधिकारियों ने सामूहिक रूप से ''युवा परिषद बुलेटिन'' राष्ट्रीय जैन समाचार पत्र (जून 2026 अंक) का विमोचन भी किया। मंच संचालन तुषार जैन (उदयपुर) ने किया, जबकि अंत में सुनील जैन लुणदिया, जिला अध्यक्ष (ग्रामीण), उदयपुर ने आभार व्यक्त किया। कार्यशाला एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम का समापन संगठन की एकजुटता, सामाजिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण तथा गुरु सेवा एवं संरक्षण के संकल्प के साथ हुआ।

प्रेषक:
उदयभान जैन, जयपुर
मो.: 94143 06696

श्री विश्वकर्मा सुथार एकता फोर्स के स्थापना दिवस पर 350 से अधिक प्रतिभाओं का सम्मान

जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए 51 लाख की सहायता की घोषणा

सांचौर (जालौर). शाबाश इंडिया। श्री विश्वकर्मा सुथार एकता फोर्स के तत्वावधान में संस्था का आठवां स्थापना दिवस एवं राज्यस्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह भव्य रूप से आयोजित किया गया। समारोह में राजस्थान के विभिन्न जिलों से समाजबंधुओं, प्रतिभावान विद्यार्थियों, शिक्षाविदों एवं गणमान्य अतिथियों ने भाग लेकर समाज की एकता, शिक्षा और संगठनात्मक सशक्तिकरण का संदेश दिया। कवि धीरज सुथार ने बताया कि समारोह के दौरान 350 से अधिक प्रतिभावान विद्यार्थियों एवं समाज की विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट उपलब्धि हासिल करने वाले प्रतिभागियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं नरसी ग्रुप के सीएमडी भामाशाह नरसी कुलरिया ने अपने संबोधन में कहा कि समाज की प्रगति का मूल आधार शिक्षा, संगठन और संस्कार हैं। उन्होंने युवाओं से सामाजिक उत्तरदायित्व निभाते हुए समाज के उत्थान में सक्रिय भूमिका निभाने तथा कौशल विकास (स्किल) और नवाचार (इनोवेशन) को बढ़ावा देने का आह्वान किया। इस अवसर पर नरसी कुलरिया ने समाज के जरूरतमंद विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए 51 लाख रुपये के आर्थिक सहयोग की घोषणा की। उनकी इस घोषणा का उपस्थित समाजबंधुओं ने जोरदार तालियों के साथ स्वागत किया। समारोह में वक्ताओं ने शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं, सामाजिक एकता, युवा नेतृत्व और समाज के समग्र विकास जैसे विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि समाज की नई पीढ़ी विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल कर रही है और ऐसी प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इस अवसर पर श्री विश्वकर्मा मेवाड़ा सुथार समाज, वागड़ बैठक के समाजबंधुओं ने नरसी कुलरिया का संत मावजी महाराज का ''साम सागर'' ग्रंथ (चौपड़ा) भेंट कर सम्मान किया तथा उन्हें बेणेश्वर धाम पधारने का आमंत्रण भी दिया।

कालबेलिया समाज की बस्ती में लायंस क्लब का सेवा कार्य, 100 जरूरतमंद हुए लाभान्वित

'आओ खुशियां बांटें' अभियान के तहत वस्त्र वितरण कर दिया मानव सेवा का संदेश

अजमेर. शाबाश इंडिया

विश्व के सबसे बड़े सेवा संगठन लायंस क्लब्स इंटरनेशनल की स्थानीय इकाई लायंस क्लब अजमेर आस्था द्वारा प्रांतीय प्रमुख कार्यक्रम 'आओ खुशियां बांटें' के अंतर्गत सेवा कार्य का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम समाजसेवी लायन राकेश पालीवाल, लायन अतुल पाटनी, पूर्व क्षेत्रीय अध्यक्ष लायन मधु पाटनी एवं अन्य भामाशाहों के सहयोग से संपन्न हुआ। इस अवसर पर अजमेर जिले की पीसांगन तहसील के ग्राम नागेलाव में अस्थायी कच्चे मकानों में निवास कर रहे कालबेलिया समुदाय के डेरे में 100 जरूरतमंद बालक-बालिकाओं एवं पुरुषों को पेंट, शर्ट, टी-शर्ट सहित विभिन्न प्रकार के वस्त्र वितरित किए गए। क्लब अध्यक्ष लायन मुकेश कर्णावट ने बताया कि कार्यक्रम का सफल संयोजन लायन अतुल पाटनी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में ग्राम सेवक एवं सरपंच सुवालाल चौहान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर सामाजिक कार्यकर्ता एवं शिक्षक चंद्र प्रकाश चौहान, पारसमल गोदा सहित अनेक गणमान्य नागरिक भी मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान सभी लाभार्थियों को सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध तरीके से वस्त्र वितरित किए गए। क्लब के जनसंपर्क अधिकारी लायन अतुल पाटनी ने बताया कि लायंस क्लब अजमेर आस्था सामाजिक सरोकारों के तहत ग्रामीण क्षेत्रों एवं कच्ची बस्तियों में निरंतर सेवा कार्य कर रहा है तथा भविष्य में भी ऐसे जनहितकारी अभियान जारी रखे जाएंगे। वस्त्र वितरण से लाभान्वित परिवारों एवं बच्चों के चेहरों पर खुशी साफ झलक रही थी। स्थानीय लोगों ने लायंस क्लब अजमेर आस्था के इस मानवीय एवं समाजोपयोगी प्रयास की सराहना करते हुए इसे जरूरतमंदों के लिए प्रेरणादायी पहल बताया।

गुरु मां आर्यिका विज्ञा श्री ससंघ का पुरानी टोंक में भव्य मंगल प्रवेश

श्रद्धालुओं के जयघोष से गूंजा नसिया परिसर, भगवान चंद्रप्रभु का हुआ अभिषेक एवं वृहद शांतिधारा

टोंक. शाबाश इंडिया

परम पूज्य गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री ससंघ का मंगलवार को आदर्श नगर टोंक से विहार करते हुए चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन नसिया, तेरापंथियान, चतुर्भुज तालाब के पास पुरानी टोंक में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। श्रद्धालुओं के जयघोष और भक्ति भाव से पूरा नसिया परिसर गुंजायमान हो उठा। प्रवक्ता राजेश अरिहंत ने बताया कि प्रातःकाल आदर्श नगर से बैंड-बाजों के साथ शोभायात्रा प्रारंभ हुई, जो बड़ा कुआं, पांच बत्ती, सुभाष बाजार, घंटाघर, बाबरों का चौक और छोटा बाजार होते हुए पांच मंदिर परिसर पहुंची। मार्ग में श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर आर्यिका ससंघ का स्वागत किया। महिलाओं ने अपने घरों के बाहर रंगोलियां सजाकर पाद प्रक्षालन एवं आरती उतारी, जबकि अनेक महिलाओं ने सिर पर मंगल कलश धारण किए। पुरुष श्रद्धालु हाथों में जैन ध्वज लेकर जयघोष करते हुए शोभायात्रा में शामिल हुए। अरिहंत भवन के बाहर कनकश्री महिला मंडल द्वारा पुष्पों की आकर्षक रंगोली सजाकर एवं 11 थालों के साथ आर्यिका ससंघ का पाद प्रक्षालन कर भव्य अगवानी की गई। इसके पश्चात पांच मंदिर परिसर में आर्यिका ससंघ ने भगवान आदिनाथ, पार्श्वनाथ, नेमीनाथ, चंद्रप्रभु एवं शांतिनाथ भगवान

के दर्शन किए। इसके बाद सैकड़ों श्रद्धालुओं के साथ शोभायात्रा चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन नसिया पहुंची, जहां महिला मंडल ने मंगल कलशों के साथ भव्य स्वागत किया। मंदिर में भगवान चंद्रप्रभु का अभिषेक, वृहद शांतिधारा तथा अर्घ्य एवं श्रीफल समर्पण के कार्यक्रम संपन्न हुए। मंगल प्रवचन श्रृंखला के अंतर्गत आर्यिका विज्ञा श्री का पाद प्रक्षालन एवं जिनवाणी भेंट कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसका सौभाग्य पवन कुमार, महावीर कुमार एवं गौरव कुमार बिलासपुरिया परिवार को प्राप्त हुआ। प्रतीक जैन सेठी ने बताया कि धर्मसभा को संबोधित करते हुए आर्यिका विज्ञा श्री ने कहा कि जीवन में ऊंचाइयों को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करना आवश्यक है। यदि व्यक्ति पूरे मनोयोग और दृढ़ संकल्प के साथ कार्य करता है तो ईश्वर एक न एक दिन उसके प्रयासों को अवश्य सफल बनाते हैं। उन्होंने कहा कि बिना प्रयास किए हार मान लेना व्यक्ति को सफलता से दूर कर देता है। उन्होंने आगे कहा कि चाहे संन्यासी हो या गृहस्थ, प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में केवल संख्या (क्वांटिटी) नहीं, बल्कि गुणवत्ता (क्वालिटी) का महत्व होना चाहिए। मजबूत संकल्प शक्ति और सतत प्रयास के बल पर ही सफलता के शिखर तक पहुंचा जा सकता है। प्रवचन के पश्चात आहारचर्या संपन्न हुई। दोपहर में स्वाध्याय एवं सामायिक तथा सायंकाल प्रतिक्रमण, आनंद यात्रा, धर्मसभा एवं मंगल आरती के कार्यक्रम आयोजित किए गए। राकेश बिलासपुरिया ने बताया कि आर्यिका विज्ञा श्री ससंघ के पावन सानिध्य में आगामी 19 जून को श्रुत पंचमी महोत्सव मनाया जाएगा। इसके अंतर्गत जिनवाणी माता की भव्य शोभायात्रा, पूजन एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। साथ ही चंद्रप्रभु नसिया में नवीन कुएं के निर्माण के लिए विधिवत पूजन के बाद खुदाई कार्य का शुभारंभ भी किया जाएगा। आर्यिका विज्ञा श्री ने धर्मसभा में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को स्वाध्याय, प्रवचन एवं शास्त्र अध्ययन के माध्यम से धर्ममार्ग पर चलने का संदेश देते हुए प्रभु भक्ति और आत्मकल्याण के लिए सदैव प्रेरित किया।

महावीर इंटरनेशनल डायमंड की प्रेरणा से सिटी डिस्पेंसरी प्याऊ का नवीनीकरण एवं शुभारंभ

बिनायकिया परिवार ने पुण्य स्मृति में कराया जनसेवा का कार्य, नियमित संचालन का दायित्व महावीर इंटरनेशनल डायमंड निभाएगा

ब्यावर. शाबाश इंडिया

महावीर इंटरनेशनल डायमंड की प्रेरणा से मेवाड़ी गेट स्थित सिटी डिस्पेंसरी की प्याऊ का नवीनीकरण स्वर्गीय महावीरचंद जी एवं स्वर्गीय उत्तमचंद जी, पुत्र स्वर्गीय भंवरी देवी एवं स्वर्गीय चांदमल जी बिनायकिया की पुण्य स्मृति में बिनायकिया परिवार द्वारा कराया गया। इस सेवा कार्य में ज्ञानचंद बिनायकिया, लोकेश बिनायकिया, अक्षय बिनायकिया, ऋतिक बिनायकिया एवं नीरज बिनायकिया का विशेष योगदान रहा। प्याऊ के नवीनीकरण के उपरांत आयोजित शुभारंभ समारोह में अमृतकौर चिकित्सालय के प्रमुख चिकित्सा अधिकारी डॉ. एस.एस. चौहान एवं बिनायकिया परिवार के सदस्यों ने फीता काटकर लोकार्पण किया। कार्यक्रम की शुरूआत बिनायकिया परिवार द्वारा मुख्य अतिथि को जल पिलाकर की गई। इस अवसर पर महावीर इंटरनेशनल डायमंड की ओर से मुख्य अतिथि एवं भामाशाह परिवार का माला, शॉल एवं साफा पहनाकर सम्मान किया गया। संस्था के चेयरमैन वीर सुशील छाजेड़ ने अपने उद्बोधन में मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं बिनायकिया परिवार का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जनहित में तैयार की गई इस प्याऊ की नियमित देखरेख एवं संचालन की जिम्मेदारी महावीर इंटरनेशनल डायमंड द्वारा निभाई जाएगी, ताकि आमजन को निरंतर शीतल पेयजल की सुविधा उपलब्ध हो सके। मुख्य अतिथि डॉ. एस.एस. चौहान ने बिनायकिया परिवार एवं महावीर इंटरनेशनल डायमंड की इस जनकल्याणकारी पहल की सराहना करते हुए कहा कि भीषण गर्मी में शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराना समाज सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने संस्था द्वारा समय-समय पर किए जा रहे सेवा कार्यों की भी प्रशंसा की। कार्यक्रम के दौरान महावीर इंटरनेशनल डायमंड के संस्थापक डॉ. बी.सी. सोढ़ी ने सिटी डिस्पेंसरी में नियमित चिकित्सक की नियुक्ति सुनिश्चित करने का आग्रह किया। वहीं वीर सुरेश रांका ने सम्मान-पत्र का वाचन किया तथा बिनायकिया परिवार को सम्मान-पत्र भेंट कर सम्मानित किया। संस्था के सचिव आशीष डोसी ने सभी अतिथियों एवं उपस्थितजनों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर समाजसेवी इंदरमल खींचा, बाबूलाल नाबेड़ा, ओमप्रकाश सोमानी, महावीर इंटरनेशनल गवर्निंग काउंसिल सदस्य वीर यशवंत रांका, महावीर इंटरनेशनल यूनीक से वीर राजेंद्र सुराना, महावीर इंटरनेशनल मेन से वीर निलेश बुरड़ सहित महावीर इंटरनेशनल डायमंड के सभी सदस्य एवं बिनायकिया परिवार के सदस्य उपस्थित रहे।

-अमित गोधा

महावीर इंटरनेशनल ने गोदावरी धाम में लगाए परिंडे, जीव-दया और पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

खेरवाड़ा. शाबाश इंडिया। भीषण गर्मी के मौसम में पक्षियों एवं अन्य जीव-जंतुओं के लिए पेयजल की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के उद्देश्य से महावीर इंटरनेशनल केंद्र, खेरवाड़ा द्वारा गोदावरी धाम परिसर में परिंडे लगाए गए। इस सेवा कार्य के माध्यम से संस्था ने जीव-दया, पर्यावरण संरक्षण और मानवीय संवेदनाओं का संदेश दिया। इस अवसर पर कार्यक्रम प्रभारी अर्जुन लाल पंचाल सहित उपस्थित पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने कहा कि गर्मी के दिनों में पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था करना मानवता का श्रेष्ठ कार्य है। उन्होंने कहा कि महावीर इंटरनेशनल समय-समय पर ऐसे जनहितकारी एवं सेवा कार्यों के माध्यम से समाज में जीवों के प्रति संवेदनशीलता और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रयास करता है। संस्था की ओर से गोदावरी धाम के अलावा गणेश कॉलोनी, सुलई, बलेवड़ी एवं महावीर कॉलोनी सहित विभिन्न स्थानों पर भी परिंडे स्थापित किए गए हैं, ताकि अधिक से अधिक पक्षियों को भीषण गर्मी में पेयजल उपलब्ध हो सके। कार्यक्रम में संस्था के संरक्षक दिनेश जैन, सदस्य अर्जुन पंचाल, अध्यक्ष मुकेश कलाल, सचिव जितेंद्र जैन, संयुक्त सचिव दिलीप जैन, मिलिंद व्यास, प्रभारी अनिल जैन, रोहित फड़िया, गोदावरी धाम के महंत तथा संरक्षक प्रकाश कलाल सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे। सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने परिंडों में नियमित रूप से पानी भरने का संकल्प लेते हुए आमजन से भी अधिक से अधिक संख्या में इस पुनीत सेवा अभियान से जुड़ने की अपील की।

मेलसिथामूर का 108 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर : दक्षिण भारत की जैन धरोहर का गौरवशाली प्रतीक

मेलसिथामूर/तमिलनाडु (मनोज जैन नायक, मुरैना)। दक्षिण भारत की पावन भूमि पर स्थित 108 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर आज भी जैन धर्म, संस्कृति, कला और इतिहास की अमूल्य विरासत को अपने भीतर संजोए हुए है। तमिलनाडु के विलुप्पुरम जिले के मेलसिथामूर में स्थित यह प्राचीन जिनालय न केवल श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र है, बल्कि भारतीय स्थापत्य कला और सांस्कृतिक वैभव का भी अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है। द्रविड़ स्थापत्य शैली में निर्मित यह भव्य मंदिर दूर से ही अपनी विशालता और मनोहारी शिल्पकला से श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। मंदिर का ऊँचा गोपुरम, विशाल मंडप, कलात्मक नक्काशी से सुसज्जित स्तंभ तथा उत्कृष्ट शिल्पकृतियाँ दक्षिण भारत की समृद्ध वास्तुकला परंपरा का जीवंत परिचय कराती हैं। मंदिर परिसर में उपलब्ध अनेक प्राचीन शिलालेख इसके ऐतिहासिक महत्व को प्रमाणित करते हुए तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन की महत्वपूर्ण जानकारी भी प्रदान करते हैं। मंदिर के मूलनायक भगवान 108 पार्श्वनाथ की दिव्य प्रतिमा यहां का मुख्य आकर्षण है। सप्तफणी नाग की छत्रछाया में विराजमान भगवान की शांत, गंभीर एवं ध्यानमग्न मुद्रा श्रद्धालुओं को आत्मिक शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव कराती है। प्रतिमा की अनुपम कलात्मकता और भव्यता मंदिर की गरिमा को और अधिक बढ़ा देती है। इतिहासकारों और शोधकर्ताओं के अनुसार मेलसिथामूर सदियों से जैन धर्म के अध्ययन, साधना और संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। मंदिर परिसर में प्राप्त अभिलेखों से विभिन्न राजवंशों तथा दानवीरों द्वारा इसके संरक्षण और विकास के प्रमाण मिलते हैं। यही कारण है कि यह स्थल धार्मिक महत्व के साथ-साथ ऐतिहासिक और पुरातात्विक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। मंदिर के विभिन्न मंडपों, प्राचीन प्रतिमाओं और उत्कृष्ट शिल्पाकृतियों में तत्कालीन कलाकारों की अद्भुत प्रतिभा और सृजनशीलता का अनुपम दर्शन होता है। यहां का प्रत्येक स्तंभ, प्रत्येक प्रतिमा और प्रत्येक शिलालेख अपने भीतर इतिहास का एक जीवंत अध्याय समेटे हुए है, जो भारतीय संस्कृति और जैन परंपरा की गौरवशाली विरासत का साक्षी है। — **आलेख : अंशुल शास्त्री, सांगानेर**

धन की श्रेष्ठ गति दान है, खाने से अधिक खिलाने में धर्म की प्रभावना: आचार्य विहर्ष सागर महाराज

श्रुतस्कंध विधान में बढ़-चढ़कर भाग लेने का किया आह्वान

ब्यावर. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन पंचायती नसिया जी, सूरजपोल गेट बाहर में आयोजित धर्मसभा में परम पूज्य आचार्य श्री 108 विहर्ष सागर जी महाराज ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि जीवित अवस्था में व्यक्ति को धनवान कहा जाता है, लेकिन जब उसका देहांत हो जाता है तो लोग कहते हैं कि उसका ''निधन'' हो गया, अर्थात वह धन से रहित हो गया। इससे स्पष्ट होता है कि धन व्यक्ति के साथ नहीं जाता, बल्कि उसके द्वारा किए गए पुण्य कर्म ही उसके वास्तविक साथी बनते हैं। आचार्य श्री ने कहा कि शास्त्रों में धन की तीन गतियाँ बताई गई हैं—दान, भोग और नाश। धन का सदुपयोग परिवार की आवश्यकताओं, समाज सेवा और लोककल्याण के कार्यों में करना चाहिए। भोग का अर्थ है अपने एवं परिवार के जीवन-निर्वाह में धन का उचित उपयोग करना, जबकि दान का अर्थ धर्म, सेवा और परोपकार के कार्यों में उसका विनियोग करना है। यदि धन का सदुपयोग नहीं किया जाता, तो अंततः उसकी तीसरी गति नाश ही होती है। उन्होंने कहा कि धार्मिक एवं पुण्य कार्यों में किया गया दान कभी व्यर्थ नहीं जाता। दान एक ऐसे आध्यात्मिक बैंक के समान है, जिसका प्रतिफल निश्चित रूप से प्राप्त होता है। इसका फल केवल वर्तमान जीवन में ही नहीं, बल्कि आने वाले भवों में भी मिलता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आय का एक हिस्सा धर्म एवं सेवा कार्यों के लिए अवश्य समर्पित करना चाहिए। आचार्य श्री ने कहा कि खाने से अधिक महत्व खिलाने का है। स्वयं भोजन करने से केवल अपनी तृप्ति होती है, जबकि किसी अन्य को भोजन कराने से धर्म की प्रभावना होती है और पुण्य का संचय होता है। उन्होंने यह भी कहा कि कई बार लोग मंदिर में अर्पित करने के लिए साधारण सामग्री चुनते हैं, जबकि अपने लिए श्रेष्ठ वस्तुओं का उपयोग करते हैं। भगवान और धर्म के कार्यों में सदैव श्रेष्ठ भावना तथा श्रेष्ठ सामग्री का ही समर्पण होना चाहिए, क्योंकि जैसा भाव होगा, वैसा ही पुण्य प्राप्त होगा। अपने प्रवचन में आचार्य श्री ने आगामी श्रुतस्कंध विधान की महत्ता बताते हुए श्रद्धालुओं से इसमें बढ़-चढ़कर भाग लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि श्रुतज्ञान की आराधना आत्मकल्याण का श्रेष्ठ माध्यम है। श्रुतस्कंध विधान में सहभागिता से धर्म लाभ, पुण्य संचय और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है, जिसका सकारात्मक प्रभाव वर्तमान जीवन के साथ-साथ भविष्य के भवों में भी प्राप्त होता है। इस अवसर पर आचार्य श्री के शिष्य मुनि श्री विजयेश सागर जी महाराज ने भी श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए श्रुतस्कंध विधान की महिमा का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि जिनवाणी ही मोक्षमार्ग की सच्ची मार्गदर्शक है। श्रुतज्ञान के प्रति श्रद्धा और उसका अध्ययन व्यक्ति के जीवन में विवेक, संयम और धर्मभाव का विकास करता है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से विधान में सहभागी बनकर धर्म लाभ अर्जित करने का आह्वान किया। दिगम्बर जैन पंचायत के अध्यक्ष सुशील बड़जात्या एवं मंत्री रितेश फागीवाला ने बताया कि परम पूज्य आचार्य श्री 108 विहर्ष सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में 17 एवं 18 जून को श्रुतस्कंध विधान का भव्य आयोजन किया जा रहा है। समाज के सभी वर्गों में इस आयोजन को लेकर विशेष उत्साह है और बड़ी संख्या में श्रद्धालु धर्म लाभ प्राप्त करने के लिए सहभागिता कर रहे हैं। प्रवक्ता राकेश जैन ने बताया कि धर्मसभा में प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित होकर आचार्य श्री एवं मुनि संघ के प्रेरणादायी प्रवचनों का लाभ ले रहे हैं। समाज की ओर से सभी श्रद्धालुओं के लिए आवश्यक व्यवस्थाएँ की गई हैं तथा विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन निरंतर किया जा रहा है।

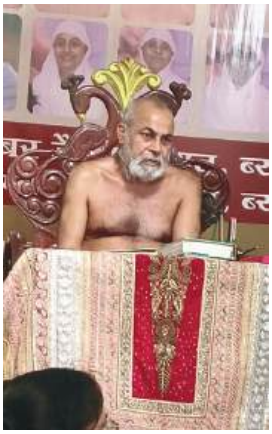

युवा आत्मविश्वास से लबरेज या भ्रमित? जयपुर क्रिएटिविटी ग्रुप की मासिक बैठक में हुआ मंथन

जयपुर. शाबाश इंडिया। आज का युवा पहले की तुलना में अधिक आत्मविश्वासी, महत्वाकांक्षी और जागरूक है, लेकिन अनेक विकल्पों और बढ़ते सामाजिक एवं व्यावसायिक दबावों के कारण वह कई बार स्वयं को असमंजस और दुविधा की स्थिति में भी पाता है। आधुनिक जीवन की जटिल चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए मेंटरशिप, मूल्य आधारित शिक्षा, भावनात्मक मजबूती और रचनात्मक सोच की आवश्यकता है। यह विचार जयपुर क्रिएटिविटी ग्रुप (जेसीजी) की मासिक बैठक में व्यक्त किए गए। बैठक में हेमजीत मालू, सुधीर, प्रदीप, अर्जुन, डॉ. यश, माधुरी, कैलाश, रेशमा खान, नील, लक्ष्मी, कल्पना, प्रतिमा, कामना, डॉ. नैना, पारुल, डॉ. नेहा तथा राकेश सहित अनेक सदस्यों ने विषय पर अपने विचार एवं अनुभव साझा किए। ग्रुप की संस्थापक डॉ. अमला बत्रा ने कहा कि आत्मविश्वास और उलझन एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। अपनी पहचान बनाने और जीवन में आगे बढ़ने की कोशिश के दौरान युवा अक्सर इन दोनों परिस्थितियों का एक साथ सामना करते हैं। ऐसे समय में सही मार्गदर्शन, सकारात्मक सोच और आत्मविश्लेषण उन्हें संतुलित निर्णय लेने में सहायता प्रदान करते हैं। कार्यक्रम के दौरान डॉ. सुषमा के.के. ने बताया कि जयपुर क्रिएटिविटी ग्रुप की प्रत्येक मासिक बैठक में किसी न किसी समसामयिक एवं ज्वलंत सामाजिक विषय पर सार्थक चर्चा आयोजित की जाती है, जिससे प्रतिभागियों को नए दृष्टिकोण प्राप्त होते हैं और सकारात्मक संवाद को बढ़ावा मिलता है। बैठक के अंत में सभी सदस्यों ने मौसम के अनुरूप पारंपरिक व्यंजनों का आनंद लिया तथा अनौपचारिक संवाद के माध्यम से आपसी विचारों का आदान-प्रदान किया। — **डॉ. सुषमा के.के., जयपुर**

राजधानी में पुनः पधारे भावलिंगी संत, 17 माह बाद कृष्णानगर में हुआ भव्य मंगल प्रवेश

गुरु-भक्तों के वात्सल्य मिलन से भावविभोर हुआ कृष्णानगर, 19 जून को होगा श्री सरस्वती मंत्र बीज संस्कार

सोनल जैन. शाबाश इंडिया

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली की पावन धरा एक बार फिर भावलिंगी संत परम पूज्य जिनागम पंथ प्रवर्तक, संघ शिरोमणि, श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज ससंघ के मंगल आगमन से धन्य हो उठी। लगभग 17 माह बाद कृष्णानगर में आचार्य श्री के पुनः आगमन से श्रद्धालुओं की लंबे समय से प्रतीक्षित अभिलाषा पूर्ण हुई और पूरा क्षेत्र भक्तिमय वातावरण से सराबोर हो गया। उल्लेखनीय है कि आचार्य श्री का कृष्णानगर से मंगल विहार जनवरी 2025 में हुआ था। इसके बाद भी श्रद्धालुओं ने गुरुभक्ति की डोर को निरंतर मजबूत बनाए रखा और प्रतिदिन गुरुचरणों में उपस्थित होकर पुनः कृष्णानगर पधारने का विनम्र निवेदन करते रहे। भक्तों की अटूट श्रद्धा और समर्पण के परिणामस्वरूप आचार्य श्री ने एक बार फिर चतुर्विध संघ सहित कृष्णानगर में मंगल प्रवेश किया। सोमवार, 15 जून का दिन उस समय ऐतिहासिक और अविस्मरणीय बन गया, जब गुरु और भक्तों के मिलन के साथ संत-संतों का वात्सल्यपूर्ण संगम भी देखने को मिला। आचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज ससंघ कैलाश नगर से विहार करते हुए कृष्णानगर की ओर अग्रसर थे। इसी दौरान पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महामुनिराज के शिष्य मुनि श्री अनुपमसागर जी महाराज ससंघ तथा आचार्य श्री विमर्शसागर जी के शिष्य मुनि श्री विशमसागर जी महाराज ससंघ ने 33 पीछीधारी आचार्य संघ का भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर पादप्रक्षालन, विनयांजलि एवं श्रद्धा-सुमनों के साथ गुरुचरणों का अभिनंदन किया गया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर 20 जून को होगा "आनंदम योग शिविर" का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। ''पहला सुख निरोगी काया'' के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में 20 जून को प्रातः 5:30 बजे से 7:30 बजे तक महावीर स्कूल, सी-स्कीम, जयपुर में 'आनंदम योग शिविर' का आयोजन किया जाएगा। शिविर का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को योग के प्रति जागरूक करना तथा स्वस्थ, संतुलित और आनंदमय जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना है। इस अवसर पर आयोजन समिति के पदाधिकारियों ने योग शिविर के पोस्टर का विमोचन किया। कार्यक्रम के चेयरमैन सुधीर जैन गोधा ने बताया कि शिविर में योग प्रशिक्षण का दायित्व प्रसिद्ध योगाचार्य गुरु ढाका राम जी निभाएंगे। वे 'आनंदम योग' के माध्यम से प्रतिभागियों को उत्साहपूर्ण एवं सकारात्मक वातावरण में योगाभ्यास कराएंगे। यह शिविर इंटरनेशनल वैश्य फेडरेशन (जिला जयपुर), योगा पीस संस्थान एवं जयपुर रनर्स क्लब के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है।

आयोजन को लायंस क्लब डिस्ट्रिक्ट 3233 एम-1, जैन सोशल ग्रुप सेंट्रल संस्था तथा रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ का सहयोग प्राप्त है। शिविर के मुख्य सहयोगकर्ताओं में कबीरा ऑयल, शक्ति सोलर एवं वसुधा इंफ्रा प्रोजेक्ट्स शामिल हैं। आयोजन समिति ने सभी नागरिकों से अपने परिवार एवं मित्रों के साथ अधिक से अधिक संख्या में शिविर में भाग लेने की अपील की है। इच्छुक प्रतिभागियों से अनुरोध किया गया है कि वे दिए गए पंजीकरण लिंक के माध्यम से अपना रजिस्ट्रेशन कर इस आनंदमय योग शिविर का हिस्सा बनें तथा योग को जन-जन तक पहुंचाने के अभियान में सहभागी बनें। समिति का मानना है कि योग न केवल व्यक्ति को शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ बनाता है, बल्कि समाज और विश्व कल्याण का भी प्रभावी माध्यम है।

आचार्य श्री सुन्दर सागर महाराज के सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन औषधालय की पांचवीं शाखा का लोकार्पण

बापू नगर स्थित सत्संग भवन में आयुर्वेद चिकित्सा सेवा का हुआ शुभारंभ

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन औषधालय की पांचवीं शाखा का लोकार्पण बापू नगर स्थित सत्संग भवन में परम पूज्य आचार्य श्री 108 सुन्दर सागर महाराज साहब के पावन सान्निध्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य श्री ने औषधालय के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करते हुए इसे समाज सेवा एवं जनकल्याण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया। लोकार्पण समारोह में श्री दिगम्बर जैन औषधालय के अध्यक्ष निहालचंद सोगानी, कार्याध्यक्ष संदीप कटारिया, मंत्री महावीर जैन झागवाले, कोषाध्यक्ष अशोक कुमार लुहाड़िया, शांतिकुमार गंगवाल, चेतन कुमार जैन सहित कार्यकारिणी के अनेक पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में समाज के गणमान्य व्यक्तियों में श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर, बापू नगर के अध्यक्ष राजकुमार सेठी, मुनि सेवा संघ के राजीव गाजियाबाद, महामंत्री सुनील पाटनी, सुधांशु कासलीवाल तथा श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र महावीरजी के अध्यक्ष उमरावमल संघी सहित अन्य समाजजन भी मौजूद रहे। इस अवसर पर संस्था के पदाधिकारियों ने बताया कि श्री दिगम्बर जैन औषधालय पिछले 115 वर्षों से जनसामान्य की स्वास्थ्य सेवा एवं सुरक्षा के लिए समर्पित होकर कार्य कर रहा है। वर्तमान में इसकी पहली शाखा बोरड़ी का रास्ता स्थित मुख्य औषधालय के अलावा जनकपुरी त्रिवेणी एवं बांस बदनपुरा में भी संचालित हो रही है, जहां प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के माध्यम से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

कोटा थर्मल में निःशुल्क हृदय रोग जांच एवं परामर्श शिविर आयोजित, 150 कर्मचारी हुए लाभान्वित

✍ आजाद शेरवानी

कोटा। कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन एवं कोटा हार्ट इंस्टीट्यूट के संयुक्त तत्वावधान में कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन स्थित ऑक्युपेशनल हेल्थ सेंटर में निःशुल्क हृदय रोग जांच एवं परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कोटा थर्मल के अधिकारियों, कर्मचारियों, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के कार्मिकों तथा ठेका श्रमिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर के दौरान प्रतिभागियों की निःशुल्क स्वास्थ्य जांच की गई, जिसमें ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर, बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई), ईसीजी तथा थायराइड जांच शामिल रही। प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. रचित सक्सेना ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हृदय रोगों की रोकथाम, नियमित स्वास्थ्य जांच और स्वस्थ जीवनशैली के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, तनावमुक्त जीवन और समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण कराने की आवश्यकता पर विशेष बल देते हुए अनुशासित दिनचर्या अपनाने के लिए प्रेरित किया। शिविर में लगभग 150 अधिकारियों, कर्मचारियों एवं ठेका श्रमिकों ने निःशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं विशेषज्ञ चिकित्सीय परामर्श का लाभ प्राप्त किया। कार्यक्रम में मुख्य अभियंता श्रीमती शिखा अग्रवाल, अतिरिक्त मुख्य अभियंता शैलेन्द्र कुमार सिंह तथा संयुक्त निदेशक (कार्मिक) हरिओम अवस्थी विशेष रूप से उपस्थित रहे। मुख्य अभियंता श्रीमती शिखा अग्रवाल ने कर्मचारियों को बेहतर स्वास्थ्य और स्वस्थ हृदय के महत्व के प्रति जागरूक करते हुए नियमित स्वास्थ्य जांच एवं अनुशासित जीवनशैली अपनाने का आह्वान किया।

आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज का जोबनेर में भव्य मंगल प्रवेश, धर्ममय वातावरण से गुंजायमान हुआ नगर

आयुष पाटनी

जोबनेर. शाबाश इंडिया। धर्मनगरी जोबनेर मंगलवार को उस समय श्रद्धा और भक्ति के रंग में रंग गई, जब वात्सल्य वारिधि परम पूज्य आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज का 37 साधु-साध्वियों के विशाल संघ के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। श्रद्धालुओं ने उत्साह एवं श्रद्धाभाव के साथ आचार्य श्री की अगवानी कर दर्शन एवं वंदना का पुण्य लाभ प्राप्त किया। आचार्य श्री ससंघ जोबनेर बाईपास से विहार करते हुए नगर में पहुंचे। जोबनेर आगमन से पूर्व उन्होंने श्री कर्ण नरेंद्र विश्वविद्यालय का अवलोकन भी किया। इसके पश्चात भव्य शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई श्रद्धा और उल्लास के साथ निकाली गई। शोभायात्रा सर्वप्रथम श्री शांतिवीर जैन गुरुकुल पहुंची, जहां आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि वर्ष 1967 में गुरु के नाम पर स्थापित इस शिक्षण संस्थान का आज भी समाज द्वारा सुचारु, प्रामाणिक एवं समर्पित भाव से संचालन किया जाना अत्यंत प्रशंसनीय है। इससे पूर्व आर्यिका श्री विचक्षणमति माताजी एवं मुनि श्री प्रभव सागर जी महाराज ने आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का गुणानुवाद प्रस्तुत किया। मिक्की बड़जात्या ने बताया कि जोबनेर का आचार्य श्री से एक अद्भुत आध्यात्मिक संबंध रहा है। आचार्य श्री के 125 दीक्षित शिष्यों में सगे भाई, पति-पत्नी, पिता-पुत्री, दादा-पोती, सास-बहू तथा माता-पुत्री जैसे पारिवारिक संबंधों वाले अनेक लोग शामिल हैं, जिन्होंने अलग-अलग समय पर उनसे दीक्षा ग्रहण की। उन्होंने बताया कि जोबनेर के दो सगे भाइयों मुनि श्री प्रभव सागर जी एवं मुनि श्री सहिष्णु सागर जी ने 20 फरवरी 2015 को एक साथ दीक्षा ग्रहण की थी। वहीं मुनि श्री विशाल सागर जी एवं आर्यिका श्री विचक्षणमति माताजी ने 29 अप्रैल 2015 को पति-पत्नी के रूप में एक साथ दीक्षा लेकर आध्यात्मिक जीवन का वरण किया। विशेष बात यह रही कि इन दोनों की माता एवं सास ने भी अलग-अलग वर्षों में दीक्षा ग्रहण कर एक अनूठा इतिहास रचा। धर्मसभा के दौरान चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन का सौभाग्य मानकचंद-सुरेश बड़जात्या को प्राप्त हुआ। पाद प्रक्षालन पं. महावीर प्रसाद, संजय बड़जात्या एवं अजय बड़जात्या द्वारा तथा शास्त्र भेंट का पुण्य लाभ प्रवीण कुमार एवं अंकेश कुमार ठोलिया ने प्राप्त किया। इस अवसर पर जयपुर, सीकर, बड़ के बालाजी, मदनगंज-किशनगढ़, बगरू, फुलेरा, सांभर, मारोठ, लूणवा, भैंसलाना, भादवा, सिनोदिया एवं मींडा सहित विभिन्न स्थानों से बड़ी संख्या में समाजबंधु उपस्थित रहे और श्रद्धापूर्वक कार्यक्रम में सहभागिता निभाई। इसके उपरांत भव्य शोभायात्रा के साथ आचार्य श्री ससंघ का श्री चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर में मंगल प्रवेश हुआ, जहां बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त किया। समाजजन आचार्य श्री के जोबनेर प्रवास को धर्म प्रभावना, आध्यात्मिक जागरण एवं सामाजिक चेतना के लिए अत्यंत प्रेरणादायी मान रहे हैं। प्रवास अवधि में धर्मसभाओं, प्रवचनों एवं विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

12वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में जिला स्तरीय योग कार्यक्रम का पोस्टर विमोचन

21 जून को राजीव गांधी स्टेडियम में होगा भव्य आयोजन

✍ रमेश भार्गव, शाबाश इंडिया

हनुमानगढ़। 12वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में 21 जून को प्रातः 6:00 बजे से 8:00 बजे तक राजीव गांधी स्टेडियम, हनुमानगढ़ में जिला स्तरीय योग कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए जिला प्रशासन एवं आयुर्वेद विभाग के संयुक्त तत्वावधान में पोस्टर का विमोचन किया गया। पोस्टर का विमोचन जिला कलेक्टर डॉ. खुशाल यादव, उपनिदेशक आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा विभाग डॉ. तीर्थराज शर्मा, डॉ. कुलदीप (प्राकृतिक एवं योग चिकित्सालय), पूर्व जिला संयोजक पतंजलि योग समिति विजय कौशिक तथा योग प्रशिक्षक तरुणा सारस्वत ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर डॉ. खुशाल यादव ने कहा कि योग भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है, जो स्वस्थ शरीर, संतुलित मन और सकारात्मक जीवनशैली का आधार है। उन्होंने जिले के नागरिकों, विद्यार्थियों, युवाओं एवं सामाजिक संगठनों से अधिक से अधिक संख्या में कार्यक्रम में भाग लेकर योग को अपनी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि नियमित योगाभ्यास से अनेक शारीरिक एवं मानसिक रोगों से बचाव संभव है और यह स्वस्थ समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उपनिदेशक डॉ. तीर्थराज शर्मा ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का उद्देश्य योग के वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक महत्व को जन-जन तक पहुंचाना है। योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवन को संतुलित और अनुशासित बनाने की प्रभावी जीवन पद्धति है। उन्होंने बताया कि जिला स्तरीय कार्यक्रम में सामूहिक योगाभ्यास, योग प्रोटोकॉल आधारित सत्र तथा स्वास्थ्य जागरूकता से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। डॉ. कुलदीप ने कहा कि नियमित योग एवं प्राकृतिक जीवनशैली अपनाकर व्यक्ति अनेक जीवनशैली जनित बीमारियों से बच सकता है। वहीं विजय कौशिक ने सभी योग साधकों एवं आमजन से समय पर पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की।

साधु आते हैं तो धर्म की गंगा बहती है : आर्यिका सिद्ध श्री माताजी

✍ रिपोर्ट : सुरेश चंद्र गांधी, नौगामा (जिला बांसवाड़ा)

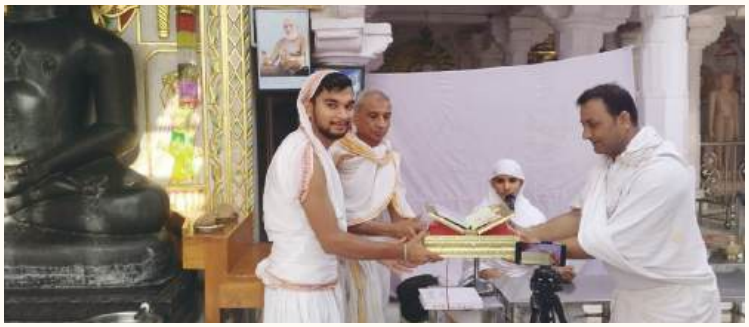

नौगामा। परम पूज्य आचार्य श्री 108 विभव सागर जी महाराज की शिष्या आर्यिका सिद्ध श्री माताजी इन दिनों नौगामा नगर में विराजमान हैं। उनके पावन सान्निध्य में मंगलवार को बड़े बाबा आदिनाथ भगवान एवं भगवान नेमिनाथ की वृहद शांतिधारा श्रद्धा एवं भक्ति के साथ संपन्न हुई। शांतिधारा आर्यिका श्री के पावन मुखारविंद से संपन्न कराई गई, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सहभागिता निभाई। अभिषेक एवं शांतिधारा के पश्चात आयोजित धर्मसभा में अपने मंगल प्रवचन के दौरान आर्यिका सिद्ध श्री माताजी ने कहा कि ''जब साधु आते हैं तो धर्म की गंगा बहती है।'' उन्होंने कहा कि गृहस्थ जीवन की विडंबना यह है कि व्यक्ति पहले गृहस्थी बसाता है और फिर उसे संभालने एवं चलाने में पूरा जीवन व्यतीत कर देता है। इस भागदौड़ में वह अपने आत्मकल्याण और अंतर्मन के परिष्कार को भूल जाता है। उन्होंने कहा कि साधु-संतों के आगमन पर धर्म की धारा अवश्य प्रवाहित होती है और लोग उनके प्रवचन भी सुनते हैं, लेकिन अनेक बार घर लौटते ही उन शिक्षाओं को भूल जाते हैं। इसके बावजूद गुरुजन जीवों को सद्मार्ग दिखाना नहीं छोड़ते, क्योंकि कौन-सा उपदेश किस जन्म में आत्मा को जागृत कर दे, यह कोई नहीं जानता। आर्यिका श्री ने कहा कि आज भले ही साधु के वचन हमारे कानों तक सीमित रह जाएं, लेकिन वही संस्कार भविष्य के किसी भी जन्म में हमें मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर कर सकते हैं। इसलिए धर्मसभा में बैठना और प्रवचन सुनना कभी व्यर्थ नहीं जाता। प्रवचन के उपरांत अतिवीर अतिशय गांधी को जिनवाणी संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने पर प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर दिगम्बर जैन समाज, कलीजरा की ओर से आर्यिका सिद्ध श्री माताजी को श्रीफल भेंट कर कलीजरा नगर में चातुर्मास करने का विनम्र निवेदन किया गया। माताजी ने सभी श्रद्धालुओं को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। उक्त जानकारी जैन समाज के प्रवक्ता सुरेश चंद्र गांधी ने दी।